ॐ

सत्यार्थप्रकाशस्थ शब्दार्थ भानुकोष

जिसको

त्यागी शब्दार्थ भानु के रचिता तथा भूत पूर्व संस्कृत
टीचर बी० स्कूल देवबन्द जिला बिजनौर
महुवा ग्राम निवासी श्रीमान् पण्डित
ब्रह्मानन्द शर्मा, जी महाराज
यजुर्वेदी ने निर्माण किया

तथा

उनके भ्राता पं० **मुरारी दत्त शर्मा, कविराज**
ने
संशोधन किया

और

लाला कर्मचन्द युगलकिशोर जी अमृतसर
निवासी ने अपने व्यय से

सम्वत १९७१ दयानन्दाब्द ३१

बाम्बे मैशीन प्रैस लाहौर में छपवाया ॥

प्रथमवार २०००] [मूल्य ॥)

जो भूमिका में नियोग आदि के बारे में लिखे
है वह किसी विशेष कार्य से नहीं छप सका उनकी
२०० दरख्वासतें आने पर प्रथक छपवाया जावेगा।
शीघ्र दरख्वासतें आनी चाहियें—

निवेदक :—

पं० ब्रह्मानन्द शर्म्मा, यजुर्वेदी

मिलने का पता :—

लाला ब्रजलाल, युगल किशोर जी

ढुण्डा तालाब आखाड़ा रुखड़

अमृतसर

ओ३म्

भूमिका।

प्रिय पाठको!

प्रत्येक जाति की उन्नति उसके पूर्वजों के बनाये ग्रन्थों पर निर्भर है। और उनग्रन्थों से भी उस अवस्था में होती है। जबकि उनके प्रत्येक शब्द के अर्थ संबन्ध का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जाये। इस न्यायानुसार तथा स्वानुभव से मेरा विचार भी इस ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाशस्थशब्दार्थभानु) के बनाने का हुआ। क्योंकि मैं जब प्रथम बार ही अध्यापनविधि में प्रवृत्त हुआ और मुजफ्फर नगर प्रान्त के बलों नगर पाठशाला में सत्यार्थ प्रकाशादि स्वामीजी के ग्रन्थों के पढ़ने वाले अनुमान १५ के आने लगे उनमें कई भाषा को अच्छे प्रकार पढ़ते थे परन्तु सत्यार्थ प्रकाश के अनेक शब्दों का अर्थ उनको प्रतीत नहीं होता था। एवम फलौदि जाने पर अनुभव में उन्नति हुई। परन्तु विशेष परिचय इस बात का मुझको सहारनपुर प्रान्त के देवबन्द नागरीय-ए० वी० स्कूल में जाने और वहां पर विद्यार्थी आश्रम (बोर्डिङ्ग) का प्रबन्ध करते हुये ७० विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा में सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाने से हुआ। इस प्रकार की शिक्षा का विद्यार्थी आश्रम में होना-श्रीमान् त्यागि ब्राह्मण कुलोत्पन्न-बाबूलोकचन्दजी बी. ए. हेडमास्टर साहब के उत्साह का फल था जिनसे मुझमें भी बड़ा परिवर्तन हुआ परन्तु वहां पर देखा गया कि जिन विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी (८ वीं) पर्यन्त भाषा और संस्कृत ही लीथी वेभी सत्यार्थ प्रकाश के अनेक शब्दों का अर्थ नहीं निकाल सकते थे। इससे अनुमान हुआ कि साधारण भाषा जानने वाले तो बहुत ही कम शब्दों को समझते होंगे। और यह भी अनुभव हुआ कि बहुत से मनुष्य सत्यार्थ प्रकाश मूल तो बड़े उत्साह के साथ लेते हैं परन्तु जब पढ़ने बैठते हैं तो समझ में नहीं आता ऐसी अवस्था में या तो सदैव के लिये उठा के रखदेते हैं वा किसी अपने पौराणिक पाण्डे

से उसके अर्थ लगवाने लगजाते हैं वह कुछ का कुछ ही बतलाकर अपने पीछे लगने का प्रयत्न करता है। और अन्ध के पीछे अन्ध वत चलकर निमग्न होजाते हैं। इस कारण मैने जो शब्द क्लिष्टानुभव किये उनको सत्यार्थ प्रकाश से प्रथक करके (सत्यार्थ के पाठकों की सुगमता के लिये) पुस्तक रूप में सर्व सज्जनों के समक्ष करता हूं। और आशा करता हूं कि कृपा शालि पुरुष इसको ग्रहण करके मुझको कृतार्थ करेंगे। अस्तु॥

इस में तीन कोष्ट प्रत्येक पृष्ट पर बनाये गये हैं। उनमें से प्रथम में मूल ग्रन्थ के संस्कृत शब्द हैं। दूसरे कोष्ट में अर्थ लि है और तीसरे में विशेष व्याख्या तथा भाषान्तरों से शब्द पर्या लिखे हैं। फिर प्रत्येक पृष्ट पर इस कोश में जो शब्द आये है उन प्रथक २ सूचि देकर शब्द संख्या लिख दी। इस सूचि के होने शब्द के निकालने में देर किंचिद् भी न लगे गी। यद्यपि स शब्द अकारादि क्रम से लिखे हैं तदपि सूचि के होने से अत्य सुगमता होगई है तदन्तर स्वरादिकों की शब्द संख्या दीगई है उसके पीछे नियोगादि शब्दों पर नोट लिखकर समाप्त किया गया है।

इसकी निर्विघ्न समाप्ति जिस परम ब्रह्म परमात्मा की महति कृपा से आज सम्वत् १९७० विक्रमि ४ श्रावण को करता हूं उसको अतिः धन्यवाद है। तथा उनमहाशयों का भी धन्यवाद करता हूं कि जिनकी कृपा से मैं इसके लिखने योग्य बना। उनमें से प्रथम नाम श्री० १०८ परमहंसपरिब्राज काचार्य स्वामी दर्शनानन्दसरस्वति स्वामीजी महाराज का है कि जिन के स्थापित किये वदायुं गुरुकुल में कुछ विद्या प्राप्त हुई। द्वितीय नाम सेठ सुन्दरदासजी अमृतसरी का है कि जिन्होंने कई वर्ष पर्य्यन्तभोजनादि के प्रबन्ध से पढ़ने का अवकाश प्रदानकिया। एवम अन्यान्यसहायकों का भी अत्यन्त धन्यवाद करता हूं। ओ३म् शम३

पं० ब्रह्मानन्द शर्म्मा।

संस्कृत शब्द	भाषार्थ	विशेष व्याख्या तथा भाषान्तर से पर्य्याय
अ	अ	अ
अभिप्राय	मतलब	किसी बात वा लेख के सत्य स्वरूप को जानने का नाम अभिप्राय है।
अवश्य	जरूर	जिसके विना वह कार्य्य पूरा न हो जिससे वह वस्तु नियुक्त करनी है। उसको अवश्य कहते हैं॥
अनर्थक	जो अर्थ वाला न हो	किसी शब्द पद वाक्य अथवा मंत्र आदि के सत्य अर्थ छोड़ कर उलटे करदेने का नाम अनर्थक है उसको फारसी में खराब कहते हैं॥
अप्रसिद्ध	छिपा हुआ जो मशहूर नहीं	जो नेत्रों और कानों से नहीं दीखना और न सुना जाता उसे अप्रसिद्ध कहते हैं॥
अप्रमाण	जो प्रमाणिक न हो	प्रमाण आठ होते हैं अर्थात् १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३उपमान॥आदि
अग्राह्य	जो ग्रहण करने योग्य नहीं	जैसे झूठ बोलना और मद्य मांसादि वस्तु॥
असम्भव	जो हो न सके	जैसे आकाश के फूल गधे के सींग वन्ध्यास्त्री के पुत्र के पुत्र का विवाह यह बात तीन काल में भी नहीं होसकती इस लिये असम्भव है इसीप्रकार की और बातों को भी असम्भव कहते हैं॥

	संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
८	अखिल	आश्रय वाला या जिसकी गिनती न होसके समस्त	जिसमें पूरी ताकत अर्थात् सामर्थ्य हो, उसको अखिल कहते हैं। और अखिलका बेशुमार भी अर्थ है ॥
९	अचर	जो चल न सके	जैसे पाषाण वृक्ष आकाशादि वस्तु
१०	अर्थबोध	अर्थ का बोध होना	किसी शब्द के आन्तर्य भाव को समझने का नाम अर्थ बोध है।
११	अविरोध	वैर भाव का न होना	सब प्राणियों में अपने सदृश दु:ख सुख होता जानकर उसको मन वचन और काया से दु:ख नहीं पहुंचाने का नाम अविरोध है
१२	अयन	तीन ऋतु या जिस [illegible] करके रास्ता चला जाय रेल आदि सवारी और घर	अर्कस्य दगानी उत्तरायणम् अयनं गच्छति अर्कः अनेन अयगतौल्युट पूर्व पशात्मन्नायमग, इति णत्वम दक्षिणागतिस्तु दक्षिणायनम् एवम् द्वे अयने एकावत्सरः अयनं अनेन इति अयनम् अयनम् पथिगदे ऽर्कस्यो दग्दक्षिण, तो गतौ इति हेमन्त सूर्य्य की उर्ध गति को दक्षिणायन

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			कहते हैं, अर्थात् जिस करके सूर्य्य की उर्ध्वगती हो, उसको अयन कहते हैं. अथवा मनुष्य जिस करके एक स्थान से दूसरे पर जासके ऐसी जो सवारी उनका नाम अयन है संस्कृत में प्रमाण दिये हैं, उनको देखो घर का नाम भी अयन है।
१३	अवयव—	टुकड़ा-हिस्सा भाग-टोटा।	किसी एक वस्तु को चार जगह किया जावे तो वह एक जगह का दूसरी जगह वाले का अवयव कहलावेगा यथा-किसी वृक्ष की एक शाखा को उस वृक्ष का अवयव कहेंगे। और इस ही प्रकार हम अपने हाथ या पग को अपने शरीर का अवयव कहेंगे। इत्यादि।
१४	अंग	अवयव+१ सम्बोधनार्थ+ द्विवारा अर्थ में भी- आता है, जोड़	यह शब्द इन ४ अर्थों में आता है-अर्थात्-अवयव-सम्बोधन— अर्थात् किसी को बुलाने में द्विवारा अर्थात्-एकवार जो कहा गया, वा कियागया, अथवा हो गया तदन्तर यदि वहि क्रिया फिर कहनी वा होनी हो, तो वहां अङ्ग शब्द आवेगा, और जोड

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			अर्थ ऐसे स्थान में होता है-जैसे कोई कहे कि मेरे अङ्ग में पीड़ा है तो जानो कि इसके किसी जोड़ में दर्द है।
१५	अविनाशी	जिसका नाश न हो	अविनाशी उसको कहते हैं-जो भूतभविश्यत और वर्तमान काल में एकसार है, पैदा होना, मरना, तथा शिशुयुवा, वृद्धत्वादि-अवस्थान्तर को प्राप्त न हो।
१६	अनुमान	आठ प्रमाणों में से एक का नाम अनुमान है।	कारण को देखकर कार्य्य को जानना, और कार्य को देखकर कारण को जानना, अर्थात्-किसी वस्तु के एक अङ्ग को देखकर सर्व वस्तु का ज्ञान हो जाने को अनुमान कहते हैं, यथा, कोई मनुष्य किसी स्थान में धुवां उठता देखे तो वह जान लेगा कि वहां अग्नि अवश्य है, अब यह जो अग्नि का जानना है, यही अनुमान है, इस प्रकार अनेक पदार्थों में अनुमान होता है।
१७	अमूल्य	बेमोल—	जिस वस्तु का कुछ मूल्य अर्थात कीमत नहीं हो सकती उसको अमूल्य कहते हैं, जैसे मनुष्य जन्म।
१८	अभिमान	घमण्ड। अपने आपको बड़ा मानना	अभिमान तीन प्रकार का होता है धनका-बलका, तथा बुद्धि का,

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			इनतीनों को जो अपने आप में वड़ा मानता है, वह अभिमानी घमण्डि कहाता है।
१९	अधिक	ज्यादाह।	जब दो वस्तुओं को लें तो जिस के वाझ से तुलाकी डण्डि नीचे की ओर झुके उसका नाम अधिक है इसी प्रकार पैमाने आदि से भी जानलेना।
२०	अज	जो उत्पन्न न हो	जैसे ईश्वर-जीव, और जगत का कारण प्रकृति कभी उत्पन्न [पैदा] नहीं हुवे-इनको अज कहते हैं।
२१	अभाव-	न होना वा नाश	किसी वस्तु के न होने और नष्ट हो जाने को अभाव कहते हैं, इसको फार्सी में अदम मौजूदगी कहते हैं अभाव चार प्रकार का है यथा प्रगाभाव, जो प्रथम नहीं था, प्रध्वंसाभाव जो हो करनार है, एक की अपेक्षा एक का, जैसे गौ में घोड़े और घोड़े में गौ का अत्यन्ता भाव जो तीन काल में भी न हो।
२२	अत्याव-श्यक	बहुत ज़रूरी जिसके बिना कार्य सिद्धनहो	किसी कार्य को करते हुवे वह कार्य जिस वस्तु के बिना पूरा न होसके वह वस्तु उसकार्य के प्रति-अत्यावश्यक है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२३	अखण्डित	पूरा	जिस को तोड़ा न गया हो और किसी प्रकार की न्यूनता न हो, उसको अखण्डित और पूरा कहते हैं ॥
२४	अनुष्ठान	अभ्यास	किसी कार्य्य के सम्पूर्ण करने के निमित्त उसमें तन मन धन से लग जाने का नाम अनुष्ठान है ।
२५	अधोगति	नीचे गिरना	धर्मार्थ काम मोक्ष सम्बन्धी कार्य्यों को त्याग कर अधर्माचरण करने का नाम अधोगति होता है ।
२६	अत्यन्त कामातुरता	लिङ्गेन्द्रिय के वश होजाना	जो वैश्यादि गमनार्थ अत्यन्त इच्छा करता हो और न मिलने पर दुःखी होता हो उसको कामातुर कहते हैं ।
२७	अनुरोध	रोक अनुकूलता	अनुरोधः अनुवर्त्तनम् द्वे आनुकूल्यस्येति अमरः । रोकने रूप क्रिया और अनुकूलता में रहने को अनुरोध कहते हैं ।
२८	अनध्याय	पाठशाला सम्बन्धी छुट्टी	जो विद्यार्थियों को पाठशालाओं के अध्यापक दिन नियत करते हैं जैसे अष्टमी, प्रतिपदा, या एतवार का दिन है उनको अनध्याय कहते हैं ।
२९	अनिन्दित	निन्दा रहित	जिसकी निन्दा (बुराई) न हो सके ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३०	अनुकूल	जैसा होना योग्य हो मर्जी के मुआफ़िक़	बुद्धि आदि के अनुसार होने को अनुकूल कहते हैं।
३१	अर्थापति	जिसमें बिना कहे अर्थ की प्रतीती हो	जैसे किसी ने किसी से कहा कि कारण से कार्य की उत्पत्ति होती है उसके विना कहे यह दूसरी बात सिद्ध है कि बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता इस प्रकार के अर्थों को अर्थापति कहते हैं।
३२	अपर	जो पर न हो	जो किसी वस्तु से उरे हो उसको अपर कहते हैं और उस वस्तु को पर कहते हैं।
३३	अपरत्व	समीपता	जो दूर नहीं।
३४	अन्योन्या-भाव	वस्तुओं के आपस में एक न होने कानामहै	जैसे गौ में घोडा और घोडे में गो का अभाव है। इस परस्पर अभाव को अन्योन्या भाव कहतेहैं
३५	अत्यन्ता-भाव	कभी न होना	जो न प्रथम था न अब है न आगे होगा उसको अत्यन्ता भाव कहते हैं जैसे आकाश के फूल तीन काल में भी नहीं होसकते॥
३६	अपवाद सूत्र	विरोधि सूत्र	जो सूत्र पहिले सूत्र के अधिकार को हटाकर अपना अधिकार जमाले यथा आद्गुणः का वृद्धि रेचि बाधक है इनका विषय इस

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	,,	,,	प्रकार का है जैसे एक राजा के
	,,	,,	राज्य में से दूसरा राजा थोड़ा
	,,	,,	देश स्वाधीन करले यह देशको
	,,	,,	दबाने वाला राजा पहिले राजा
	,,	,,	का अपवाद कहावेगा इसी प्रकार
	,,	,,	सूत्रों को जानों।
३७	अनित्य	जो नित्य न हो नाश होने वाला हो	जो कभी बने फिर बिगड़े उस को अनित्य कहते हैं जैसे कार्य्य रूप जगत कभी बनता फिरकारण में लीन होता है।
३८	अल्पलाभ	लाभ थोड़ा होना।	मूलधनादि द्रव्य के कालान्तर में अधिक होजाने रूप फल को लाभ कहते हैं मूल धनं लाभो ऽधिकं फल मित्यमरः। मूल-धनाधिकं निशपत्रं कालान्त-रेणः सलाभः स्यात्। इसको फार्सी में नफा या फायदा कहते हैं और इसके थोड़ा होने का नाम अल्प लाभ है।
३९	अल्पबुद्धि	थोड़ी समझ	जिसको बहुत समझाने पर भी बात ठीक समझ में न आवे उसको अल्प बुद्धि कहते हैं।
४०	अन्वय	पदों का मेलवा जिसके होने से जो हो वह उस का अन्वय होगा	किसी मन्त्र वा श्लोक के पदों को जोड़कर अभ्यासिक भाषा

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	,,	,,	बनाने का नाम अन्वय कहाता है। यथा :-
	,,	,,	अश्वापयद् भीतये सहस्रा: त्रिंशतंहतै:दासानामिन्द्रो मायया।
	,,	,,	शब्दार्थ-अस्वापयत हनन किया है दमिति भयदान सहस्राश्रिंशत ३०००० मारने का हथियार दासानाय-दासों को। इन्द्र: राजा ने मायया बुद्धि से।
	,,	,,	अन्वय-राजा ने बुद्धि से भय दिखाने के हेतु ३०००० हज़ार दासों को मारने के हथियारों से मार डाला। इसी प्रकार सर्वत्र जानो।
४१	अनुक्रम पूर्वकम्	क्रम से बंधे हुए नम्बर वार	जो क्रम (नियम) पहिले से चला आया उसके अनुकूल चलने का अनुक्रम पूर्वक कहते हैं। इसको फार्सी में बाकायदे-बा-हस्ब दस्तूर कहते हैं।
४२	अयोग्य	जो योग्य न हो	जो जिस काम के करने मसमर्थ न हो उसको उस काम के अयोग्य कहते हैं। जैसे मृतक शरीर जीवों को लेकर चलने में असमर्थ है इसलिये उसको जीवित के ले

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	,,	,,	चलने के अयोग्य कहेंगे ऐसे ही अन्यत्र जानना।
४३	असदृश	जो परस्पर बराबर न हो	जिनके गुण कर्म स्वभाव आपस में नहीं मिलते उसको असदृश कहते हैं।
४४	अप्रसन्नता	प्रसन्न न होना	नाराज़ रहना गुस्सह रहना रूठजाना आदि।
४५	अतिशय शोभा युक्त	बडी शोभा से मिली हुई	जिसके देखने से चित्त अत्यन्त प्रसन्न हो उसको अति शोभा युक्त कहते हैं इसको फार्सी में निहायत खूब सूरत कहते हैं।
४६	अनुवृत्ति	पिछली बात का प्रसङ्ग मिलाना	जैसे अष्टाध्यायी के हलन्त्यम सूत्र का अर्थ करने के लिये उपदेशऽजनुनासिक इत को मिलाते हैं (फा० जिकर)
४७	अधो	नीचे	,, ,, ,,
४८	अभिप्राय	ठीक अर्थ	किसी वाक्य के ठीक अर्थ को अभिप्राय कहते हैं। फारसी में मतलब बोलते हैं।
४९	अपूर्व	उत्तम	जो पाहिले न हो वा वर्तमान वस्तुओं में उत्तम हो उसको अपूर्व कहते हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५०	अदृष्ट	जो दृष्ट न हो	छिपा हुआ वा दिखाई न देने वाले को अदृष्ट कहते हैं ।
५१	अक्षयधन	जिसका नाश न हो ऐसा धन	जिस धन पर कभी कोई आ-क्रमण-वा नाश नहीं कर सकता उसको अक्षयधन कहते हैं जैसे विद्याधन को कोई नहीं छीन सकता ।
५२	अल्पायु	थोड़ी उमर	,, ,, ,, ,,
५३	अध्यापक	पढ़ाने वाला पुरुष	जो सत्य शास्त्रों को पढ़ावे उसका नाम अध्यापक है ।
५४	अध्यापिका	पढ़ाने वाली स्त्री	,, ,, ,, ,,
५५	अनुक्रम	क्रम वद्ध	जो एक के पीछे दूसरा होता है उसको अनुक्रम और फार्सी में नम्बरवार वा तर्तीबवार कहते हैं ।
५६	अरण्य	वन	जहां बहुत दूरतक वृक्षादि खड़े हों मनुष्य कम जा सकें उसको वन कहते हैं जैसा कांगड़ी गुरु-कुल के समीप है ।
५७	अधर्माचरण	धर्माचरण न करना	सत्य बोलना आदि कर्मों का त्याग और असत्य बोलने आदि

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	,,	,,	में प्रवृत्त होने का नाम अधर्माचरण है ।
५८	अधिकार	अख्त्यार	किसी कार्य्य में व्यवस्था देने की शक्ति का नाम अधिकार है ।
५९	अन्य	दूसरा और	एक से भिन्न का नाम अन्य है ।
६०	अक्षय आनन्द	नाश रहित आनन्द	जिस आनन्द का बिन भोगे नाश न हो उसको अक्षयानन्द कहते हैं जैसे मुक्ती रूप आनन्द ।
६१	अयुक्त	जो युक्त न हो ठीक न हो	फार्सी में (नामुनासिब कहते हैं)
६२	असूया	ऐब ढूंढना	गुण में दो पल गाने का नाम भी असूया है ।
६३	अर्थदूषण	धन को बुरे कामों में लगाना	वैश्यागमन और मद्य मांसादि में अथवा मूर्ख ब्राह्मणों को दानादि करने और फिर वह धन पापाचरण में व्यय होकर जो दोष उत्पन्न होते हैं उन दोनों को अर्थ दूषण कहते हैं ।
६४	अत्यन्त उत्साहप्रातियुक्त	बहुत उमङ्ग से भरा हुआ	जो काम होने योग्य नहीं उसमें भी लगे रहने रूप क्रिया का नाम उत्साह है । उस से बहुत मिले हुए को अत्यन्त उत्साह प्रतियुक्त कहते हैं ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
६५	अमात्य	मन्त्री (वज़ीर)	जो राजा का राज्य कार्य में हर समय सहारा देने वाला हो उस को अमात्य कहते हैं।
६६	अगमनीय	न गमन करने योग्य	जैसे दूसरे की स्त्री अथवा वेश्यादि गमन करने योग्य नहीं उनका नाम अगमनीय है।
६७	अध्यक्ष	अधिकारी मालिक अदालती	जैसे लाट साहब को अपने सूबे का अधिकार (अखत्यार) है इस लिये वह उसके अधिकारि है (अध्यक्ष है)।
६८	अलब्ध	जो न मिले	न मिलने वाली वस्तु को अलब्ध कहते हैं।
६९	असमर्थ	बेताकत	गरीब, लाचार जिसका कुछ वश नहीं चल सकता उसको असमर्थ्य कहते हैं।
७०	अर्थ संग्रह	धन एकत्रकरन	न्याय पूर्वक धन के कमाने को अर्थ संग्रह कहते हैं।
७१	अनुमति	कई मनुष्यों का मिला हुआ विचार	सलाह देने का नाम अनुमति है।
७२	अनुरागि	बहुत प्यार करने वाला	फार्सी में वामहुवत कहते हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
७३	अन्तहपुर	रानियों केरहने का स्थान	राज्य महल ।
७४	अप्राप्त	जो नहीं मिले वा नहीं मिल सकना	,, ,, ,, ,,
७५	अविद्या	ठीक ज्ञान का न होना	अग्नि को अग्नि जानना विद्या है और जो विद्या से विपरीत है भ्रम अन्धकार और अज्ञानरूप है इसको अविद्या कहते हैं ।
७६	अन्धकार	अन्धेरा	कुछ ना दीखना ज्ञान न रहना ।
७७	अप्राणी	जिसमें जीवनहीं	जैसे वृक्ष,पहाड,आदि बेजान हैं
७८	अवस्थान्तर	सूरत का बदल कर दूसरा हो जाना	जैसे मिट्टी से घडा दूसरी सूरत है ।
७९	अविरोधी	जो विरोधी न हो	जो अनुकूल हो ।
८०	अनादि सान्त	आदि रहित अन्त सहित	जो उत्पन्न न हो और नाश न हो उसको अनादि सान्त कहते हैं ।
८१	अन्तः करणस्थ चिदाभास	अन्तः करण में रहने वाला चेतन का आभास	चित्त बुद्धि मन अहङ्कार को मिलाकर जो सूरत बने उसको अन्तःकरण कहते हैं ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			चेतन उसका नाम है जिसमें क्रिया करने कराने की शक्ति हो अभासनाम परछावें का है जिस को प्रतिबिम्भ, साया, आक्स आदि नामों से बोलते हैं।
८२	अनुत्पन्न	जो उत्पन्न न हो	जो कभी जन्म न ले (पैदा न हो) उसको अनुत्पन्न कहते हैं। जैसे ईश्वर जीव, जगत का कारण।
८३	अमृत	एक प्रकार का जल जिसको पीकर ना मरे यज्ञ की आहुतियों से बचे हुवे भात आदि को भी अमृत कहते हैं	इस श्लोक में भातयज्ञ शेषको अमृत कहा है। यथा— विघसा शीभवेन्नित्यं नित्यं चामृत भोजनः। विघसो भुक्तशेषं स्याद्यज्ञ शेष प्रथा मृतनम् इति मनुस्मृति।
८४	अद्वैत सिद्धि	जिसमें दूसरे की सिद्धी न हो एक ब्रह्म की ही हो	एक ब्रह्म को मानकर उसे होने तथा और वस्तुओं को कल्पित और झूठी रस्सी में सांप की तरह से बतलाने को अद्वैतसिद्धी कहते हैं इसको भाषान्तर में वहदत का सबूत कहते हैं।
८५	अद्वितीय	जिसकी बराबर दूसरा कोई न हो	भाषान्तर में लाशानी कहते हैं। जैसे ईश्वर के बराबर कोई नहीं है वह अद्वितीय है।
८६	अतिरिक्त	दूसरा १ आल-	जो एक न हो उनमें अतिरिक्त

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
		हिदा २ न्यारा ३ अहु ४ अलग	भाव रहना है। जैसे अमृतसर से लाहौर अलग है इसको अतिरिक्त कहते हैं।
८७	अपेक्षा	आवश्यकता जरूरत वा आमने सामने मुकाबला	दिन के होने से रात का ज्ञान होता है यदि दिन न हो तो रात को कौन जान सके वा नाम धर सके अपेक्षा शब्द भी इसी प्रकार के शब्दों में वर्तता है। जैसे दिन की अपेक्षा रात और रात की अपेक्षा दिन होता है। इत्यादि।
८८	अहङ्कार	अपने आपको बडा मानना	इसको भाषान्तर में खुदी कहते हैं।
८९	अविकारिणी	जो विकार विगाड करने वाली न हो	जो खराबी न करे।
९०	अवस्थान्तरयुक्त	वदलने वाली अवस्था से मिला हुआ	इसको परिवर्तन शील भी कहते हैं। भाषान्तर में हालत बदलने वाला कहते हैं।
९१	अद्भुत	जो कभी न देखा न सुना हो	भाषान्तर (अजीब)
९२	अन्तरिक्ष	अकाश पोल जिसमें शब्द रहता हो	भाषान्तर असमान्।
९३	असंख्यातलोक	जो जीवों की गिनती में न आ सकें इतने लोक	संख्या नाम गिनती का है। जो गिनती न हो उसको संख्या कहते हैं जिसमें चराचर प्राणी और

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			जड़ादि पदार्थ रहते हों उसको लोक कहते हैं। भाषों बेशुमार मुलक।
९४	अज्ञ	जिसको कुछ ज्ञान नहीं	नादान।
९५	अन्तःकरण	एक शक्ति का नाम है	अन्तःकरण उस शक्ति का नाम है जो चित्त, बुद्धि, मन, अहंकार को मिलकर बने।
९६	अन्तः करणो पाधि	अन्त करण से छिपा हुआ	,, ,, ,, ,,
९७	अन्तः करणावच्छिन्न	,, ,, ,,	अन्तःकरण से मिले हुये का नाम अन्त करण वच्छिन्न है।
९८	अत्यन्त विच्छेद	बहुत ही अलग	ईर्त फाकुली।
९९	अहोरात्रि	दिन रात्री	अह दिन और रात्रि रात का नाम है। दोनों को मिलकर अहो रात्री बना।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१००	अन्त	अवसान आखिर	जो वस्तु जिस स्थान से आगे को न हो उसका नाम अन्त है।
१०१	असीम सामर्थ्य	जिस सामर्थ्य की सीमा नहीं	भाषान्तर (वेहद ताकत)
१०२	अस्थि पर्यन्त	हड्डी तक	अस्थि हड्डी का नाम है।
१०३	अनुबन्ध	सहारा देने वाला	(मददगार)
१०४	अधिकारी	स्वामी मालिक जिसको अधिकार हो।	भाषान्तर (हकदार मुस्तहिक)
१०५	अधर्म युक्त	खोटे कामों में लगा हुआ	काफिर
१०६	अत्यन्त कामात्मा	जिसकी आत्मा विषय में बहुत फंसी हो	(इफ़रात शहवत)
१०७	अपमान	मानका घटना निरादर होना	इज़्ज़त उतरनी (ज़िल्लत होनी)
१०८	अन्तरभाव	छिप जाना गुवाच जाना अन्दर ना विचार	,, ,, ,, ,,
१०९	अनाचार	जो आचार से विरुद्ध हो	आचार अच्छे कामों में लगने को कहते हैं। जैसे वेदादि का पठन सत्य बोलना आदि।
११०	अतिवृष्टि	बहुतवर्षा होना	अत्यन्त बारिष होना।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१११	अतिताप	अधिक गर्मी (वड्ड)	बहुत धूप पड़ना।
११२	अभिष्ट	जिसकी अभिलाषा हो जो इष्ट हो	मतलूबा।
११३	अप्रचार	प्रचार का न होना	रिवाज न देने का नाम अप्रचार है।
११४	अप्रवृति	जो प्रवृति न हो अदम रिवाज	वार्ता:, प्रवृत्ति:, वृतान्त, उदन्त यह चारों पर्य्याय हैं। और प्रवाह वृत्ति यह दोनों नाम निरन्तर गमन के भी हैं।
११५	अविद्यान्धकार	अज्ञान रूपी अंधेरा	जहालत का अंधेरा।
११६	असाध्य	जिसका कोई साधन न हो सके	बेकाबू।
११७	अदण्डय	जो दण्ड देने योग्य नहीं	सजा के नाकाबिल।
११८	अपशब्द	बुरा शब्द	गाली का कलाम।
११९	अवसर	समय	वक्त मौका!
१२०	अध्यास	उलटा समझना	एक वस्तु को उसके विरुद्ध उलटा समझना अध्यारोपया अध्यास कहाता है। जैसे रस्सी को सर्प जानना।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१२१	अनिर्वचनीय	जो कहने में न आवे जिस की कोई सूरत नहीं बतला सके	
१२२	अवकाश	फुरसत	
१२३	अद्यावधि	अबतक	इस समय पर्यन्त ।
१२४	अश्रुपात	आंसू गिरना	अश्करेजी ।
१२५	अधमदाता	नीच दानी	कभी ना सखी जो दान देकर ताना देने वाला कि तुझको हम से लेना ही आता है। हमारा थोड़ा सा काम भी नहीं करता ।
१२६	अकस्मात	अचानक	जिसकी खबर नहीं इत्फाकिया ।
१२७	अनुकरण	नकल उतारना	जैसा एक करे वैसा ही दूसरा करे तो वह अनुकरण करने वाला हुआ ।
१२८	अहितकारक	जो हितकर न हो	बुरा चाहता हो ।
१२९	अपूर्वलाभ	जो लाभ प्रथम न हुआ हो	
१३०	अस्तु	होवे	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१३१	आतिरिक्त हस्त	हाथ से अलग	
१३२	अन्यमतस्थ	दूसरे मतवाला	गैर महजब वाले।
१३३	अत्युद्युक्त	कार्य्य करने वा मानने का बड़ा पक्का	निहायत आयाद।
१३४	अदृष्ट	आंखों से छिपा हुआ	(गायब)
१३५	अगाध	वेथाह	जिसकी गहराई का पता नलगे।
१३६	अवलोकन	किसी वस्तु का देखना	
१३७	अनुवाद	एक भाषा से दूसरी बनाना	जैसे संस्कृत से भाषा वा अंग्रेजी बनाई जावे।
१३८	अव्यवहित	व्यवधान से रहित	जिसके बीच में किसी प्रकार की रुकावट (परदा) न हो उसको अव्यवहित कहते हैं।
१३९	अन्योन्याश्रयदोष	दो वस्तुओं में एक के सहारे दूसरी रहने का दोष	यथा—सोहन ने कहा कि यदि मोहन के पुत्र का विवाह होय तो मेरे का होय, और मोहन ने कहा कि जो सोहन के पुत्र का विवाह हो तो मेरे का भी हो अब यह दोनों आपस में एक दूसरे के आश्रय हैं। बस यही दोष है।
१४०	अनवस्था दोष	अवस्था का ठीक न होने रूप दोष	दौर तसल सुल जैसे प्रथम वीज है वाथा उसका भी वीज है वाथा फिर

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			उसका भी है वा होगा इस ही प्रकार कहते जाओ तो ओड़ हीन मिलेगा इसका नाम अनवस्था है अर्थात् यह बात कभी समाप्त ही [न होगी।
१४१	अक्रिय	ना करने योग्य	बेफेल।
१४२	अधमाधम	नीच से भी नीच	बड़ा कुकर्मी।
१४३	अयुक्त	जो युक्त नहीं अच्छा नहीं	नामुनासिब।
१४४	असार	सार रहित	शक्तिहीन।
१४५	अशक्त	शक्ति रहित	बे जोर।
१४६	अधर	लटका हुआ	पृथिवी आदि से अलग अड्डु इति पाञ्चाले।
१४७	अत्यन्त मूर्छित	जिसको कुछ खबर नहीं	निहायत बेहोश।
१४८	अतिकुपित हुआ	बहुत ही गुस्से में भरा हुआ	बहुत खफा हुआ
१४९	आति शोक	बहुत रञ्ज	
१५०	अनुग्रह	कृपा दया	मेहरवानी।
१५१	अध्ययन	पढ़ना	
१५२	अविधि	जो विधी न हो	कानून के खिलाफ, कायदे से उलटा।
१५३	अन्तर-ध्यान	छिप जाना आंखों के सामने न रहना	गायब होजाना। समाधि लगाने का नाम भी अन्तरध्यान होता है

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१५४	अभिशेक किया हुआ	तिलक लगाया हुआ	
१५५	असभ्यता	मूर्खता गंवार पन	जहालत शरारत।
१५६	अकारण	विना कराण	बे सबब।
१५७	अर्धाङ्गी	अर्धे शरीर की अधि-कारणी	शास्त्रों में स्त्री को पुरुष व अर्धाङ्गी कहा है।
१५८	अशुद्ध भूत	प्रकृति से अशुद्ध	जिसका स्वभाव ही अशुि वाला हो।
१५९	अधिकार	प्रक्रिया व्यव-स्थापन आज्ञा	हुक्म।
१६०	अनिश्चित	निश्चय न होना	यकीन न होना एतबार न आना।
१६१	अनाभिष्ट	जो इष्ट नहीं माना हुआ नहीं	जिसके प्राप्त करने की भी इच्छा न हो उसको अनाभिष्ट कहते हैं।
१६२	अल्पज्ञ	अज्ञानी	कम समझ।
१६३	अनाप्त	जो आप्त न हो झूठा अधर्मी	
१६४	असाव धानी	सावधान न रहना बेफिकर होजाना	गफलत।
१६५	अमन्तव्य	जो माना हुवा नहीं	जैसे आर्य्य समाज पुराणों को नहीं मानता, इस कारण वह उस

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			के अमन्तव्य है, और वेद तथा वेदानुकूल ग्रन्थों को मानते हैं वह उनका मन्तव्य है।
१६६	अविद्या युक्त जन	अज्ञानी मनुष्य मूर्ख आदमी	जहालत से भरा हुआ।
१६७	अभिष्ट	चित्त को अच्छा लगने वाला	दिलख्वाह।
१६८	अनीश्वर वादि	नास्तिक जो ईश्वर को नहीं मानते	जैनी आदि ईश्वर को नहीं मानते
१६९	अवसान	समाप्ति	आखिर।
१७०	अयोग्य-व्यवहार	खोटा चलन	अनर्थक बे अर्थ जिसका कुछ अर्थ नहीं बे मायने।
१७१	अज्ञात गंभीर जल	न जाना हुआ गहरा जल	
१७२	अनादि	जो उत्पन्न न हो।	
१७३	अवक्षेपण	नीचे को फेंकना	
१७४	अभिमान	अपने आपको बड़ा मानना	गरूर
१७५	अमुक	फलां	
१७६	अजितेन्द्रिय	जिसकी इन्द्रियें वश में नहीं	

	संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
१७७	अभावना	जो भावना से उलटी हो	अर्थात जो मिथ्या ज्ञान से अन्य निश्चय मान लेना जैसे जड़ में चेतन और चेतन में जड़ का निश्चय कर लेना है उसको अभावना कहते हैं ।
१७८	अर्थापत्ति	जो एक बात के कहने से दूसरी बात [illegible] उसको अर्थापत्ति कहते हैं	
१७९	अजगर	सांप अजदाह	
१८०	अन्तरधान होगया	छिप गया	
१८१	अजा	बकरी	
१८२	असीम	सीमा रहित	सीमा हद का नाम है । वे हद अर्थात आद अन्त रहित ।
१८३	अवयवों में अवयवी	भागों में भागी	जैसे मनुष्य के शरीर में हाथ और आंख कानादि अनेक अवयव है परन्तु इन सर्व अवयवों में अवयवी जीवात्मा ही है इसी प्रकार अन्यत्र जानो ।
१८४	अति दुश्कर	बड़ा कठिन है	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१८५	अव्याहत गति	निरन्तर गमन	जैसी पृथिवी सूर्य्यादि की गती है वा मनुष्य के श्वास की गती है इस प्रकार की गती को अव्याहत गती कहते हैं।
१८६	अप्रतिष्ठित	आदर रहित	छिपा हुआ।
१८७	आतिवृष्टि	बहुत वर्षा	
१८८	आति ताप	बहुत गर्मी	
१८९	आति शीत	बहुत शर्दी	
१९०	अश्वतरी	अग्नियान अग्नबोट	
१९१	अस्वयंबर विवाह	स्वयं वररहित विवाह	
१९२	असूया	गुणों में दोष और दोषों मे गुणा रोपण	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	आ	आ	आ
१	आधार	आश्रय सहार	
२	आत्मयोगी	आत्मा में ध्यान लगाने वाला मनुष्य	आत्मा दो प्रकार का है जीवात्मा परमात्मा जो जीवात्मा परमात्मा का ध्यान करता है उसको आत्मा योगी कहते हैं।
३	आध्या-त्मिक	शरीर के अन्दर से ही दुःख उत्पन्न होना	जो दुःख आत्मा और शरीर में अविद्या राग द्वेश मूर्खता और ज्वरादि पीड़ा का होता है उसको आध्यात्मिक कहते हैं।
४	आधिभ-वतिक	जो दुःख प्राकृतिक वस्तुओं से प्राप्त हों	जैसे शत्रुओं तथा व्याघ्र सर्पादि से उत्पन्न होते हैं।
५	आधिदैवक	देवगति से उत्पन्न होने वाले दुख	अधिक वर्षा, होने वा न होने और अग्नि के लगने से जो दुःख प्राप्त हों उनका नाम आधिदैविक है।
६	आधूनिक ग्रन्थ	नवीन पुस्तक	आधूनिक वह पुस्तक है जो वेदानुकूल नहीं, थोड़े काल के बने हुए।
७	आर्षग्रन्थ	ऋषियों के बनाये हुए पुस्तक	शथपथादि ब्राह्मण, गोभिलयादि गृहसूत्र, दशोपनिषद मनुस्मृति आदि ग्रन्थ मिलावट को छोड़ आर्ष हैं।

	संस्कृत	भापार्थ	व्याख्या
८	आभूषण	गहना	जेवर सजाने का सामान।
९	आलस्य	सुस्ती	
१०	आवृत्ति	अभ्यास	एक काम को बहुत बार करने का नाम आवृत्ति है।
११	आज्ञादाता	आज्ञा देने वाला काम करने को कहने वाला	इजाजत या हुकम देने वाला।
१२	आकुञ्चन	सुकड़ना	फैले हुए का एक स्थान में आजाना।
१३	आशय	किसी बात का ठीक अर्थ	जिसको भावार्थ वा मतलब कहते हैं।
१४	आकृति	सूरत चेष्टा	
१५	आवश्यक कार्य्य	बहुत शीघ्रता जल्दी का काम	जिसमें देर लगानी नहीं चाहिये, बहुत जरूरी काम।
१६	आकर्षण	खीचने कीशक्ति	जो शक्ति चम्बुक पत्थर में लोहे को अपनी ओर लाने की है उसको आकर्षण कहते हैं एवम सर्वत्र जानो।
१७	आपत्ति काल	बेबसी कासमय	मुसीबत का वक्त।
१८	आवश्यकता	चाहना जरूरत	
१९	आसक्त	लोभी ग्रस्त	फंसा हुआ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या।
२०	आप्त पुरुषों के द्वारा	सच्चे आदमियों के जरिये	
२१	आवाहन	किसी को बुलाना	तलब करना, जैसे गवर्मेन्ट अपराधियों को बुलाती है।
२२	आश्रय लेना	सहारा लेना	किसी का सहारा या फौजादि की मदद लेने को आश्रय लेना कहते हैं।
२३	आत्मस्थ	आत्मा में ठहर कर	परमात्मा में ध्यान लगाने को भी आत्मस्थ कहते हैं।
२४	आधार	सहारा थाम्ह संभालने वाला	जिस पर कोई वस्तु धरीजावे और वह थमसके, उसको आधार कहते हैं। जैसे पानी पर नौका, अथवा नौका पर मनुष्यादि, पानी आधार हुआ, और नौका आधेय जानो, और मनुष्य आधेय और नौका आधार जानो।
२५	आधेय	सहारे से रहने वाला।	
२६	आवृत	जिस पर कोई वस्तु आवरण (पर्दा) कररही हो।	पोशीदा जैसे बादलों में सूरज।
२७	आच्छादित	ढकाहुआ, छिपा हुवा।	जो आंखों से न दीखे।
२८	आभास	पर छाया।	साया, अक्स, प्रतिबिम्ब इत्यादि

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२९	आवरण	रुकावट, वा, परदा ।	जैसे बादलों से सूर्य्य आवर्णित होजाता (ढक जाता) है, तो बादलों को आवरण कहते हैं ।
३०	आय	आना ।	आमदनी ।
३१	आज्ञानुसार	जैसा कहावैसा ही ।	कहने के मुताबक, हस्वल्हुकम
३२	आयुध	युद्ध (लड़ाई) करने के शस्त्र (हथियार)	तलवार, बन्दूक, तमञ्चा, अग्न्यास्त्रियादि को आयुध कहते हैं ।
३३	आर्य्यावर्त देशस्थ	भारत वासी हिन्दूस्तान में रहने वाले ।	हिमालय परवत से बिन्ध्याचल पर्यन्त, अटक से, ब्रह्मपुत्रानदी पर्यन्त, । आर्य्य वर्त देश है ।
३४	आलिङ्गन	प्रसङ्ग	हम आगोश ।
३५	आज्ञाभंग	कहीहुई बातको न मानना ।	हुक्मन मानना ।
३६	आतुर	पीड़ित, दुखी	
३७	आयु भर	सारी उमर,	
३८	आश्चर्य शक्ति	अचम्भे वाला जोर	अजीब ताकत, जैसी ईश्वर ने ऋषि दयानन्द को दी थी, कि थोड़े ही काल में सारे भारत को हिला दिया,और जैसी प्रोफेसर राममूर्ति को है, इस प्रकार की शक्ति को आश्चर्यशक्ति कहते हैं
३९	आग्राही	हठि	हठकरने वाला जिद करने वाला ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
४०	आरोग्यता	निरोगता	कोई बिमारी न होने का नाम निरोगता आरोग्यता है।
४१	आग्राह करना	हठकरना बेजा तफदारीकरना	
४२	आश्रम	जिनमें अत्यन्त परीश्रम करके उतम गुणों का ग्रहण और श्रेष्ठ कार्य्य किये जावें उनको आश्रम कहते हैं।	जैसे ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ, वान प्रस्थ सन्यस्थ।
४३	आर्य्य	श्रेष्ठ स्वभाव वाला।	जो श्रेष्ठस्वभाव, धर्मात्मा परोपकारी सत्य विद्यादिगुणयुक्त और आर्य्य वर्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं उन को आर्य्य कहते हैं।
४४	आर्यावर्त देश	भारतवर्ष हिन्दुस्तान	हिमालय, विंध्याचल पर्वत, सिन्धु, नदी, और ब्रह्मपुत्र नदी इन चारों के बीच और जहां तक उन का विस्तार है इन के मध्य में जो देश हैं। उस का नाम आर्य्या वर्त है।
४५	आचार्य्य	जो श्रेष्ठ आचार	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
		को ग्रहण करावे सब विद्याओं को पढ़ावे उस को आचार्य कहते हैं	
४६	आठप्रमाण	प्रत्यक्ष आदि आठ	प्रत्यक्ष, अनुनाम, उपमान, शब्द एतीह, अर्थापत्ति, सम्भवः, और अभाव यह आठ प्रमाण हैं। इन हीं से सब सत्या सत्य का यथा वत निश्चय मनुष्य कर सक्ता है।
४७	आचार	व्यवहार	
४८	आचरण	वर्ताव	
४९	आत्मा	ईश्वर	अतसा तत्य गमने धातु से बना है। अतति सर्वत्र व्याप नोति इति आत्मा। जो सब जगह व्यापक हो उस का नाम आत्मा है। सो ईश्वर जगत और शरीर में व्यापक है।
५०	आकर	खजाना	कोश
	इ	इ	इ
१	इतर	दूसरा और	
२	इन्द्रिय निग्रह	इन्द्रियों को उनके विषयों से रोकना	आंख' कान, नाक, रसन(जीभ) त्वचा (खाल) यह पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं। हाथ, पांव, मुख, गुदा, लिङ्ग,

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं। तथा ११ ग्यारवां मन इन का राजा है, इन ग्यारहों को वश में करने का नाम इन्द्रिय निग्रह है।
३	इच्छित	जिसकी इच्छा हो	जिस की जरूरत हो, मतलब की चीज़।
४	इतरे तरा भाव	एक में दूसरे का अभाव एक में दूसरे का न होना	जैसे अग्नि में पानी के गुण नहीं है।
५	इष्टदेव	माने हुए देवता माबूद	जैसे ईश्वर आर्य्यों के इष्ट देव हैं और सनातनी पाशाणों(पत्थरों) को इष्ट देव मानते हैं। आर्य्य जड़पदार्थों को शिर नहीं झुकाते।
६	इन्द्र जाली पुरुष वत मालूम होता है	भानमति से मालूम होता है वह रूपबासा	जिको अनेक प्रकार के रूप धारण करने आते हों, उस को इन्द्र जाली कहते हैं।
	ई	ई	ई
१	ईर्षा	द्वेश, हसद	किसी के पास धनादि पदार्थ देख मन में दुखी हो।
२	ईक्षण	दर्शन, देखना	विचार और कामना करना।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	ईर्षक	ईर्षा करने वाला	दुशमनी करने वाला।
४	ईश्वर	मालिक, रक्षक	जो उत्पातिविनाश रहित, अकाय सर्वज्ञ, सर्वसृष्टि करता, और जिस के गुण कर्म स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, इत्यादि गुणों वाला, ईश्वर कहाता है।
५	ईंधन	बालन	लकड़ि आदिकों को (जो जलाने के लियें हों) बालन कहाते हैं।
	उ	उ	उ
१	उपादान कारण	जिसके बिना कुछ न बने	
२	उपयोग	कार्य्य	जैसे यूर्पीन लोगों ने अग्नि आदि पदार्थों से काम ले कर रेलादि चलाकर लोगों को उपकार किया उन को कहते हैं, कि साहिब वलायत वालों ने जड़पदार्थों से कैसा उपयोग लिया है। इत्यादि।
३	उपद्रव	झगड़ा लड़ाई	फ़िसाद।
४	उत्पादक	पैदा करने वाला	माता पिता, या ईश्वर का नाम उत्पादक है।
५	उपदेश	बुरे कामों से हटाकर अच्छे कामों में लागना	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
६	उपस्थित	जो आंखों के सामने हो	मौजूद ।
७	उन्नतिशील	बढ़ाने वाला, ऊपर को जाने वाला	ऊचा दरजा पाने वालों को उन्नति शील कहते हैं ।
८	उदासीन	उदास रहने वाला	जिस का चित्त नहीं लगता, उस का नाम उदासी है ।
९	उपासनीय	उपासना करने योग्य	जो पूजा सत्कार करने योग्य हो उस को उपासनीय कहते हैं ।
१०	उपाधि	पदी, धार्मिक विचार कुटुम्ब के पालने वाला।	उपाधिः धर्म चिन्ता, द्वेधर्मचिन्तनस्य उपाधिः । और धर्मचिन्ता यह दो नाम धर्म के विचार करने के भी हैं । यह अमर कोष में देख लेना । स्याद् श्यागारि कस्तथि-न्तुय्याधिश्च पुमानय मित्यमरः ।
११	उपाय	युक्ति, इलाज	किसी कार्य्य को सिद्ध करनेके लिये,जो विचारकरने से निश्चित हो उस को उपाय कहते हैं ।
१२	उच्छिष्ट	जो खावे वा पीते शेष बचे जूठा	जैसे हुका जूठा है ।
१३	उच्छेद	किसी वस्तु का काटना	
१४	उपस्थ	मेढ़ लिङ्ग	पुरुष के मूत्र (पेशाब) करने के स्थान को उपस्थ कहते हैं ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१५	उपरति	रति त्याग देना	भोग विलासादि को त्याग कर एकान्त से बन करने को उपरति कहते हैं। गोशा पकड़ना कहते हैं।
१६	उन्मत	जिसको अपने शरीर की वा दूसरों की कुछ सुध न हो उनमत होता है	१ शराव पीकर अथवा, जवानी में मर कर जिस पुरुष वा पशु आदि को कुछ अपनी वा और की खबर न रहे उस का नाम उन्मत होता है।
१७	उपमर्दन	अच्छे प्रकार नाश	
१८	उष्णकाल	गमरुत०गरमी का मौसम,(पं) उनाला।	चैत्रादि महीनों का नाम उष्ण काल है। फार्सी मौस।
१९	उपकारक	उपकार करने वाला	दूसरों का भला करने वाला मदद गार।
२०	उपवन	वन के समीप में छोटा वन। वगीचा	जहां वहुत वृक्ष तथा फूल आदि हों उस का बन कहते हैं।
२१	उदार	जो लोभी न हो दान आदि खूब करता हो	हौसले वाला।
२२	उपवास	भूखा रहना, वा उस स्थान में रहना घर छोड़ना	पोपलोग भूखे रहनेको(उपवास) को वृत कहते हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२३	उपकृत होते	सहारा पाते किये हुवे को मानते	उप कृत होना, दूसरे के किये हुवेउपकार कोमानने और सहारा पाने का है।
२४	उक्तपत्र सम्पादक	कहे हुए अखबार काइडिटर	जिस वस्तु को पहिले कह चुके हों उस का फिर वर्णन आवे तो वहां उस वस्तु का नाम लेकर के केवल (उक्त) शब्द ही दिया जाता है, जैसे यहां अखबार का नाम पहिले बताचुके थे फिर उक्त शब्द ही दिया,फार्सी में,मजकूर।
२५	उतावली	शीघ्रता, जलदी	
२६	उद्वेग जनक सूत्र	उच्चाट उत्पन्न करने वाले सूत्र मन को चञ्चल करने वाले सूत्र	उद्वेगनम्(पोकली वृक्ष के फल) का भी है। (फलमुद्वेग मेतेच इत्यमरः)।
२७	उत्तर	जवाब	किसी के कुछ कहने वा लिखने का बदला कह कर वा लिख कर देने का नाम उत्तर है।
२८	उत्साह	चाव, खुशी	
२९	उक्तवचन	कहा हुआवचन	
३०	उलङ्घन	गुजरना	एक स्थान को छोड़ कर दूसरे पर जा नादि।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२१	उपाङ्ग	आगे का अंग अर्थात जो मीमांसादि छः शास्त्र हैं उनको उपाङ्ग कहते हैं	
२२	उजियाला	चांदना	
	ऊ	ऊ	ऊ
१	ऊषण	गर्म	
२	ऊन	भेड़ के बाल	
३	ऊर्ध्व	ऊंचा	
४	ऊषरभूमी	ऊंची जमीन	
	ऋ	ऋ	ऋ
१	ऋषि	जो वेदों की ऋचाओं का अर्थ कर उन पर विचार कर उन को ऋषि कहते हैं जैसे स्वामी दयानन्दसरस्वति जी थे।	ऋषन्ति वेद पश्यन्ति इति ऋषयः। इहदर्शन प्रत्यक्षि करण मेव, नचाक्षु ज्ञानम। तथा चोक्त तैतिरिय यजुराणक अज्ञान हवै पृश्नींस्त्पस्या मानान् ब्रह्मस्वयंभ्व ज्यानर्षत ऋषियोऽभवस्न दृष्टिणां मृषित्वम इति, पृश्नी पुरुशान स्वयंभुः प्रमाणान्तरं मनुपजीव्य प्रवृतम् शेषस्यष्टम्। अयमेवाद्यो निरुक्त काराणामपि उक्तम्। यथा

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			(ऋषिणां मन्त्र दृष्टयो भवन्ति) १ भाष्य ऋषिणां मन्त्र दृष्टयःमन्त्र दर्शनानि भवन्तिविद्यमाना मेवहि मन्त्राणा मृषयो येन केन चिन्न मितननिन्दान भूते, ननिन्दा, हर्ष, शोक प्रशंसादिनामन्त्राणां द्रष्टारो भवन्ति नतुकर्तार इत्यभिप्रायः। भाषार्थ। जिस जिस ऋषि का किसी वेद मन्त्र के ऊपर नाम लिखा है उस ऋषि को उस २ मन्त्र का गूढ़ आशय प्रकाश करने वाला समझो उस को मन्त्र का बनाने वाला मत जानो।
२	ऋतुगामि	एक मास बीतने पर स्त्री प्रसंग करने वाला	ऋतु नाम वर्ष के ६ भागों का भी है, परन्तु यहां उन से मतलब नहीं, यहां ऋतु नाम उस का है जो स्त्रीयों को महीने के महीने योनी के अन्दर से रक्त आता है और वह ३ वा ४ दिन के पीछे बन्द होजाता है उस को बहुदा कपड़े होने वा फूल होना बोलते हैं। जब बन्द होने पर स्नान कर शुद्ध होजाए उस समय एक वार गमन (प्रसङ्ग) करने वाले को ऋतु गामी कहा है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	ऋण	उधार, करज़	
४	ऋतु मती	पुष्पवती	प्रति मास स्त्री की योनी से एक प्रकार का रुधिर आता है उसका नाम ऋतु है वह जितने दिनों आवे उतने दिनों स्त्री ऋतु मती कहाती है। द्वादशाद्वत्सरा दूर्ध्वं मापं चाश त्समाः स्त्रियाः मासि मासि भग द्वारात्प्रकृत्यैवार्तवं स्रवत इति वैद्यक शास्त्रे।
	ए	ए	ए
१	एकार्थ वाचक	एक अर्थ का कहने वाला शब्द	जिस शब्द में से एक ही अर्थ निकले दूसरा न निकले उस को एकार्थ वाचक कहते हैं।
२	एकत्र	एक स्थान में	जो सब स्थानों से एक जगह किया हो।
३	एक अव-काशस्थ	एक स्थान में ठहरे हुए	जो न चल सके (जैसे ईश्वर और जीव एकही अवकाश शरीर ८) में ठहरे हुए हैं।
	ऐ	ऐ	ऐ
१	ऐक्यमत	एक बातको मानने वाले	एक धर्म पर चलने वाले।
२	ऐतद्देशस्थ संस्कृत विद्या	इस देश की भाषा देवबाणी	जिस भाषा में कोई दूषण न हो उस को संस्कृत कहते हैं। इस ही को प्रथम हमारे देश वासी

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			सब जानते थे, अब भी वेद इस ही भाषा में विद्यमान है।
३	ऐश्वर्य	हुकूमत धन	सुख व आनन्द।
४	ऐतिह्य	इतिहासिक	जो शब्द प्रमाण के अनुकूल हो जो कि असम्भवादि दोषों से रहित हो औरझूठ लेखन हो उस को ऐतिह्य इति हास कहते हैं।
	ओ	ओ	ओ
१	ओ३म्	यह ईश्वर का मुख्य नाम है	अवतीति ओ३म् अवरक्षणे धातु से बनता है, इस कारण, रक्षा करने वाला ओ३म् कहाता है।
२	ओङ्कार	प्रणव	
३	ओष्ठ	होंठ	बुल. इति पाञ्चाले।
४	ओषधी	दवाई	जो रोगों को नष्ट करदे उसको ओषधी, वा औषध कहते हैं।
५	ओदन	चावल	व्रीही भी इसका नाम है।
	औ	औ	औ
१	औरस	सवर्णा स्त्री में उत्पन्न हुआ पुत्र	औरसः उरस्य,(औरस्य इत्यपि) द्वे स्वजाते सवर्णाया मूढ़ायाम स्वस्माज्जाते पुत्रेनतु धर्मादौ इत्यमरस्य टीकायाम्।
२	औषधादि	दवाई आदि	

	संस्कृत क	भाषार्थ क	व्याख्या क
१	कटिवद्ध	कमर बांधकर	किसी कार्य्य को पूरा करने के लिये तन, मन और धन से लग जाने का नाम कटि वद्ध है।
२	कर्तव्य	करने योग्य, जिसके करने में धर्म और नकरने में अधर्म है उस को कर्तव्य कहते हैं	जैसे वेद का पढ़ना, यज्ञ करना और दानका देना तथा दूसरों से दिलाना, ब्राह्मण का कर्तव्य है, इसीप्रकार और अनेक कर्मब्राह्मण तथा अन्य वर्णों के कर्तव्य हैं।
३	कर्तव्या कर्तव्य कर्म	करने और न करने योग्यकाम	जिस के करने में धर्म हो, वह कर्तव्य और जिसके करने में पाप हो वह कर्तव्य कर्म है।
४	कर्म	जो किया जाय उसको कर्म कहते हैं	ऊपरको फेंकना नीचेको फेंकना जैसे धूप में फैलाना, सकोडना, जाना आना आदि कर्म कहाते हैं।
५	कलह	लड़ाई	विरोध रखना।
६	क्लेश	लड़ाई	दुःख
७	कल्पित	कल्पना किया हुवा बनाबाट झूंठा	जैसे चुहे पर हाथी रूप गणेश का चड़ना। माता का पुत्रों को खाना पुराणों में लिखा है इत्यादि को काल्पित कहते हैं।
८	कल्याणार्थ	कल्याण (सुख) के लिये	फायदे के वास्ते

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
९	कर्षित	दुबला, निर्बल, वा खैंचा हुआ	जिस के शरीर की सब हड्डी दीखती हों मांस न हो, उस को कर्षित, कहते हैं।
१०	कर	मनुष्य का हाथ वा सरकारी महसूल	
११	कर्मपत्र	कर्मों का कागज़ जिसमें अच्छा बुरा लिखा जावे	इफासनामा। अमालनामा।
१२	कण्ठस्थ	जो कण्ठ में रहने वाला हो	जो मंत्रादि हैं उन सबको बिना. पुस्तकके देखे ही किसी को सुना देने का नाम कण्ठस्थ है जबानी हिफ्ज।
१३	कठिन	मुशकिल	दुश्वार। मुश्किल। जो बड़ा यत्न करने से आवे।
१४	करुणा	दया	रहम।
१५	कल्पना	झूठ, फर्ज़, बनावट	
१६	कटु	कड़ुआ	खराब बोलना।
१७	कथित	कथन किया हुआ कहा हुआ	
१८	कर्मशंकर		अच्छे बुरे कर्मों से मिला हुवा।
१९	कर्मफल व्यवस्था	किये हुवे कर्मों का फैसला (न्याय)	कानून इफलास के नतायज।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२०	कथनानुसार	जैसा कहा वैसा ही	हस्ब फर्मान।
२१	कर्मोच्छेद	कर्मों का करना	
२२	कलंकित	कलंक लगाना बदनाम करना	जो बुरा नहीं उसको बुरा बताने का नाम कलंक है।
२	करुणामय	दया का रूप	जिस में हिंसा का ध्यान भी न आता हो, और जीव मात्र के लिये, दया हो उसको, करुणामय कहते हैं।
२४	कथन	जो कहा जाय	बयान।
२५	कलेवर	शरीर	किसी मनुष्यादि की सूरत का शरीर बनानेका नाम कलेवर है।
२६	कण्टक बृक्ष	कांटे वाले वृक्ष	जैसे बबूल बेल, करील, इत्यादि।
२७	कर्ता	करने वाला	जिस के स्वाधीन सब साधन होते हैं वह कर्ता कहाता है।
२८	कयामत, (फा०)	प्रलय	
२९	कदापि	कभि भी	
	का	का	का
१	कामज	काम से पैदा हुआ	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२	कारागार	वह स्थान जहां पापियों को रख कर दण्ड दिया जावे	जेलखाना, कैद।
३	कालावयव	समय के भेद काल के टुकडे. (विभाग)	प्रातःकाल सायं कालादि का नाम काला वयव है।
४	काम	इच्छा	इच्छा को काम कहते है, चाहे अच्छी हो वा बुरी, परन्तु यह शब्द अधिकतर स्त्री प्रसङ्ग में बोला जाता है।
५	कामना	इच्छा	लालच।
६	काशाय वस्त्र	भगवे कपडे	गेरू के रंग हुए. जैसे वर्तमान साधू धारण करते है।
७	काराग्रह	बन्दीघर	जेलखाना।
८	कार्योत्पत्ति	कार्य का उत्पन्न होना	काम का शुरु करना।
९	कारण	सबब	जिस से कोई वस्तु बनेवह उस वस्तु का कारण है।
१०	कार्य्य	कारण से जो उत्पन्न हो वह कार्य है	जो किसी पदार्थ के संयोग विशेष से स्थूल हो के काम में आता है, वह कार्य्य कहाता है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
११	कारसाज	कार्यसिद्धकरता	काम समारने वाला।
१२	कामज	काम से उत्पन्न होने वाले	
१३	कारागार	जेल खाना	
१४	कामों के उपभोग से	नाना प्रकार के विशय भोगने से	
	कि	कि	कि
१	किञ्चित	थोडा सूक्षम	
२	क्रिया	अमल	किसी कार्य्य के करनेको क्रिया कहते है।
३	किंकर	नौकर, भृत्य	
४	क्रियमाण		जो वर्त मान में किया जाता है सो क्रियमाण कहाता है।
५	किन्तु	परन्तु किञ्च इति	बल्के।
	की	की	की
१	कीर्ति	यश, नामवरी	शहरत।
	कु	कु	कु
१	कुचेष्टा	बुरी चेष्टा	मन में पाप धारण करके किसी को देख ने का नाम कुचेष्टा है।
२	कुग्रन्थ	बुरा ग्रन्थ	पुराणादि का नाम है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	कुत्सित	खोटा	
४	कुशोभित,	बुरीसूरतवाला जो देखने में अच्छा न हो।	
५	कुमार,	बालक	बच्चा।
६	कुमारी,	बालिका	लड़की।
७	कुपथ्य,	जो पथ्य न हो	जैसे बुखार में (ज्वर) में स्नान करना कुपथ्य है। बदपरहेज।
८	कुहर	एक प्रकार की धुन्ध	जो बर्सात वा जाड़ों के दिनों में प्रातःकाल आकाश में धूम जैसा प्रतीत होता है उस को कुहर कहते हैं।
९	कुशसंस्तर	दाब का आसन	
१०	कुदार	एक हथियार का नाम है	लोहे का होता है।
११	कुलक्षण	बुरे लक्षण	
१२	कुशल-विद्वान्	चतुर विद्वान	
	कू	कू	कू
१	कूर्म,	कच्छप कछुआ	यह जानवर पानी में रहता है, छूने से पैर हाथ भीतर कर लेता

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			है। पुराणों में इस को ईश्वर का अवतार माना है।
२	क्रूर,	दूसरे से वैर रखने वाला वा कड़ा	नृशंसो घातुकः क्रूरः पापः इत्यमरः।
१	क्रूश	सूली	
१	क्रमशः।	शन २ सहजः वा नम्बरवार	
२	कृतज्ञता,	किसी के किये उपकार को जानने स्मर्ण रखने का नाम कृतज्ञता है	
१	कृतार्थ,	किये हुवे कर्म का फल मिलजाना	किसी आदमी को जिस काम में अभ्यास करने की आवश्यकता न रहे वह उस काम में कृतार्थ होगया, मतलब को पहुंचना।
४	कृतहानि।	किये हुवे का नाश	
५	कृत्रिम	झूठा, बनावटी	
६	कृतघ्नता,	भलाई को भी बुराई की बराबर मानना	
७	कृतोपनयन	जनेऊ संस्कार हुवा बालक	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
८	कृतकृत्य	कार्य्य को कर लेना	फरिगुल तहमील।
९	कृशावर्ण	काला वरण	
	को	को	को
१	कोष,	खजाना, संचित धन इकट्ठा	जैसे कुवे में पानी रहता है ऐसे स्थान को कोष कहते हैं।
२	कोलाहल,	कानों के फाड़ने वाली ध्वनी (अवाज) वाशब्द	जैसे मन्दिरों में सुबह शाम ढोल आदि का होता है।
३	कौमार,	थोड़ी आयु वाला पुरुष	कम उमर वाला मनुष्य।
४	क्रोधज	क्रोध से उत्पन्न हुआ	
५	कोमल	नरम मुलायम	
	ख	ख	ख
१	खगोल,	आकाश का जुगराफिया	जिस में सूर्य्य चन्द्र और तारा गण का सपष्ट वृतान्त हो खगोल कहते है।
२	खः पुष्प	आकाश का फूल	
३	खण्डन,	तोड़ना	दूसरे के माने हुए पुस्तकों वा उस की बातों को अपने मन्तव्य के बल से झूठा सिद्ध करने का
४	खलड़ी,	त्वचा खाल	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			नाम खण्डन है।
५	खनना,	मूत्रेन्द्रिय के मुख पर की खाल के काटने को कहते हैं।	
	ग	ग	ग
१	गर्भाशय,	बच्चे दान, बच्चे के रहने का स्थान	स्त्री के उदर में उस स्थान का नाम गर्भाशय है जिस में बच्चा ९ मास पलता है।
२	गर्भपातादि।	गर्भाशय में बच्चे का ९ मास से पहिले उत्पन्न होकर मर जाना आदि	पूरे ९ नौ मास तक बालक का गर्भ में न रहने का नाम गर्भ पात है।
३	गर्भिणी	जिसके पेट में बालक हो उस का नाम गर्भिणी है	हमल वाली।
४	गणनीय	गणना करने योग्य	गिन ने योग्य १-२-३ आदि व्यवहार जिस में हो उस को गण नीय कहते है।
५	ग्रहणकरे,	लेलेवे	कबूल करे।
६	ग्राहक	ग्रहणकरने वाला लेने वाला	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
७	गम्भीर	गहरा	तथा शान्ति वाला पुरुष ।
	गा	गा	गा
१	गाथायुक्त	कथा मे मिला हुआ	उस ग्रन्थ का नाम, गाथा युक्त है जिस मे कि मनुष्य का इतिहास दिया हो ।
२	ग्रामीण,	गांव के रहने वाला पिण्ड का रहने वाला	देहाती, पिण्ड पंजाब में ग्राम को, कहते है ।
	गु	गु	गु
१	गुण,	जो द्रव्य के आश्रय हो रूप रस, गन्धादि २४ का नाम गुण है	जैसे अग्नि में रूप और तेज, जल मे रस और शीत पृथवी में गन्धादि इन का नाम गुण है ।
२	गुप्त,	छिपा हुआ	
३	गुरू,	बड़ा पढानेवाला	माता पिता, और जो सत्य का ग्रहण करावे, और असत्य को छुडावे, वह भी गुरु कहाता है तथा भारी पदार्थ को भी गुरु कहते है ।
४	गुह्याङ्ग	छिपे हुवे अङ्ग	
५	गुरुत्व	भारी पन	
६	गुप्तेन्द्रिय,	पुरुष का लिङ्ग तथा स्त्री की योनी को गुप्तेन्द्रिय कहते है	लघु शङ्का, (पेशाब) करने की इन्द्रिय को गुप्तइन्द्रिय कहते है ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
७	गुणातीत,	गुणों से न्यारा	गुणों से अलग अर्थात सबगुणों के स्वभावो में न फंस कर महा योगि हो के मुक्ती का साधन करने वाले को गुण तीत कहते
८	गुप्तस्थान	छिपि हुईजगह	जिस स्थान में चोर छिप सके उस को गुप्त स्थान कहते हैं। और मूत्र के स्थान का नाम भी गुप्त स्थान है।
९	गृहीत,	लिया हुआ	(अख्त्यार)
१०	गृहीता,	लेने वाला	
११	गृहकृत्य,	घरके कार्य्य	
१२	गोधूम	गेहूं-कनक इति पाञ्चाले	
१३	गौण,	साधारण, मामूली, छोटा, नीचा,	
१४	गोलक	एक प्रकार का पुत्र बराबर स्थान, गोला भूमिका।	मृते भर्तरि गोलकः इत्यमरः पती के मरे पीछे जो सन्तान हो उस को गोलक कहते हैं। शरीर का नाम भी गोलक है।
१५	गुप्तव्यवहार	छिपि हुई बातें	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	घ	घ	घ
१	घृणा,	ग्लानी,नफ़रत,	किसी बुरी वस्तु को देखने से जो चित्त, बुरा होजाता है उस का नाम घृणा है।
२	घुणाक्षर न्याय	न्यायशास्त्र में यह एकप्रकार का न्याय प्रसिद्ध है।	किसी लक्कड़ को घुण (कीड़ा) लगे, और उस लक्कड़ में कोई अक्षर सा बन जावे इस का नाम घुणाक्षर हुआ, यह कीडा अक्षर बना नहीं जानता था, परन्तु तब भी बन गया।
	च	च	च
१	चतुष्कोण,	चार कोण वाला	(मुरब्बा)
२	चर्णारविन्द	चारण, कमल	
३	चर	जो चल फिर सकते ह।	मनुष्यादि को चर कहते हैं।
४	चतुर्थ,	चौथा	
५	चक्रवर्ती-राज्य	सर्व भूमी का राज्य	सारी पृथवी का राज्य।
६	चतुष्पद,	चार पद वाले को चतुष्पद कहते हैं	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
७	चिरस्थाई,	बहुत दिनों तक रहने वाला, चिदाभास	चेतन का साया।
८	चेष्टा,	किसी कार्य्य के करने का विचार	सूरत, आकृति को चेष्टा कहते है।
९	चुम्बुक,	एक प्रकार का पत्थर	जो लोह को अपनी ओर खींचले उसको चुंबुक कहते हैं। (मकनातीस) (मज़रूह)
१०	चेतनमात्र	जीवधारी जिनमें जीव रहता हो वेही वा उनमें ही	
११	चैतन्य,	जानदार	
१२	चोखापिसान,	अच्छा आटा	
१३	चिलकतीहै	चमकती है	
१४	चारण	भाट आदि	जोकि कवित्त दोहादि बनाकर मनुष्यों की प्रशंसा करते हैं। उनका नाम चारण है।
	छ	छ	छ
१	छादन	वस्त्र कपड़ा	
२	छिद्र	झरोका छेद	(सूराख)
३	छिन्न भिन्न	तितर, बितर	बिखर जाने, मिले हुए न रहने का नाम छिन्न भिन्न है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
४	छिद्र द्वारा	छेदके रहा	(सुराख के रास्ते)
	ज	ज	ज
१	जगत	संसार	(इङ्गजङ्गमे भुवने चजगत) इत्यपि । जिसमें दिन रात चरा चलरहे, अर्थात् मरना, और जन्म लेना, हो उसको, जगत कहते हैं ।
२	जगत का कारण	जिससे संसार बने	कौन है परमात्मा ।
३	जलाशय	जिसमें जल रहता हो	तालाव, बावलि आदि को जला-शय कहते है ।
४	जाति वहिश	पंक्ति मे से निकाल देना	पतित करदेने, (छेकदेने) को जाति वहिश कहते है ।
५	जिज्ञासु	कुछ जानने की इच्छा करने वाला	(तालिव)
६	जीवित	जीता हुआ	(जिन्दा)
७	ज्योतिष विद	गणित विद्या को जानने वाला	
८	ज्वलित	प्रकाशित	(चान्दने वाली)
	झ	झ	झ
१	झरना	जहां से पानी गिरता है	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	ट	ट	ट
१	टिट्टिभि	टिटीहरी	एक जानवर कानाम टटीहरी है
२	टीका	ग्रन्थ का अर्थ	जो ब्राह्मण अपने मस्तक पर चन्दन की बिन्दी लगाते हैं उसके टीका कहते हैं ॥
	ड	ड	ड
१	डमरू	डौरू, डुगडुगी,	
२	डायन	राक्षसी	मांसादि खाने वाली स्त्री डायन कहाती हैं।
३	डोलण	तरता वा भागता फिरा करता था	
	ढ	ढ	ढ
१	ढक्का	डमरू, डौरू, डुगडुगी	जो बन्दर नचाने वाले बजाया करते ह नट वह ढका कहता है।
२	ढाक वा ढाका	पलाश, छछरा	एक प्रकार का वृक्ष होता है जिस के फूलों का नाम केसू है टेसू भी कहते हैं।
		त	
	तत्पर	करनेको तैय्यार	(आमादाह)
	तम	अंधेरा जड़ता मूर्खता	ज्ञान के न होने को मूर्ख कहतेहैं

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	तन्तु	नाता, रिशता वा सूत्र का नाम है	
४	तण्डुल	चावल	
५	तदन्तर	उसके पीछे	उसके बाद।
६	त्वचा	खाल	जिल्द। पोस्त।
७	त्यक्तव्य	छोड़ने योग्य	
८	ताड़न	घुड़कना, मारना	(सजादेना)।
९	तारतम्य	विश्राम हीन पदवी	बे इतवार दर्जा।
१०	तीव्र	तेज़	
११	तीक्ष्ण	तेज़ कठोर	पैनी। क्रोधी।
१२	तीक्ष्ण कोमल	मुलायम नोक दार	
१३	तितीक्षा	सहारना सहन करना	गर्मि हो या शीत दिन हो, सुख दुःख को बराबर जान ने का नाम तितिक्षा है।
१४	तिरस्कृत	तिरसकार किया हुआ	बेइज्जत किया हुआ।
१५	तेजोमय	ज्योति स्वरूप प्रकाशमान जैसा चन्द्रमा	शानदार, रोशन, चांदने वाला।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१६	तुरही	एक प्रकार के बाजे का नाम है	
१७	तन्तुवाय	कपड़ा बनाने वाला	जुलाहा
१८	तप्यमान होते हुए	जलते हुवे सड़ते हुवे	क्रोधादि से परिपूर्ण हुए।
१९	तातस्थ्योपाधि	उसमें ठहरने रूप उपाधी	
२०	तत्सहचरितोपाधि		उसके साथ रहने रूप उपाधि।
	द	द	द
१	दंड	दुःख सजा	
२	दण्डनीय	दुःख पाने योग्य वा देने योग्य	(सजा पाने लायक)
३	दण्डाधिकार	दुःख देने का अधिकार	सजाने का अख्त्यार।
४	दण्ड में विनय करना	थोड़ा दुःख देना नर्मि करना	घट सजा देना।
५	दण्डघ्न	दण्ड को न मानने वाला	(बागी)

	संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
६	दर्पण	शीशा जिस से मुख देखा जाता है	
७	दम	इन्द्रियों को वश में करना	
८	दक्षिण दिशास्थ	दक्षिण दिशा में रहने वाला	प्रातःकाल सूर्य की ओर मुख करके खड़े होने से दायें हाथ की ओर दक्षिण दिशा होती है ।
९	दन्तधावन	दातन करना	(मिसवाक करना)
१०	दर्शनीय पदार्थ	देखने योग्य वस्तु	(उम्दा चीज)
११	दास शब्दान्त नाम	जिसके अन्त में दास शब्द हो	छज्जुदास, लल्लुदास, गंगादास इत्यादि ।
१२	दाय भागी	हिस्सेदार	अपने बड़ों के धन में से धन लेने के अधिकारियों को दाय भागी कहते हैं ।
१३	द्वितीय पक्ष	दूसरा भाग वा सामने वाला	
१४	दिव्य गुण	उत्तम गुण	
१५	दीक्षा	गुरुमन्त्र	
१६	दुराचारी	बुरे कार्य्य करने वाला	चोरी, व्यभिचारादि करने वाले का नाम व्यभिचारी तथा दुराचारी है
१७	दुर्ग	किला	
१८	दुराचार	बुराकर्म	बद अमल, खोटा चलन

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१९	दुर्गन्धमय	सड़ायन्द वाला, बुरीगन्ध वाला	(मुताफ्फिन)
२०	दुर्गन्ध	बुरीगन्ध	(बदबू)
२१	दूशितकरने वाला	बुराई बताने वाला दोष लगाने वाला	(ऐब बताने वाला)
२२	दूत	नौकर	संदेश पहुंचाने वाले को दूत कहते है, स्त्री हो तो दूती कहाती है।
२३	दृढ़स्तम्भ	पक्का खम्भा।	
२४	दृष्टान्त	मिसाल, उदाहरण	किसी बात को समझाना।
२५	दृष्टा	देखने वाला	
२६	दृष्य	देखने योग्य स्थान	(दीदनी. दीदा)
२७	देशाचार	देशका चलन	मल्की रसम।
२८	देवासुर संग्राम्	धर्मात्मा और पापियों की लड़ाई	आर्य्यों को देव, तथा अनारियों को असुर कहते है।
२९	देवता	विद्वान	आलिम, फ़ाज़िल,
३०	द्रोह	वैर द्वेश	निफाक, मुखालफत।
३१	द्रव्य	जिसमें केवल गुण वा क्रिया	गुण दोनों रहते हों उसको द्रव्य कहते है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३२	द्रवित	पतली वस्तु	
३३	द्रवी भूत	वहने वाला पदार्थ	
३४	द्रवत्व	पतलापन	द्रवत्व गुण है पदार्थ नहीं।
३५	द्वन्द	जोड़ा	सुख दुःख, गर्मी, जाड़ा, हानि, लाभ, आदि द्वन्द कहते हैं।
३६	द्राविड़ देशोत्पन्न	द्राविड देश के पैदा हुये	
३७	देवैयाहूं	देने वाला हूं	
३८	दुष्टरूप	कुरूप बुरे रूपवाला	डरावनी सूरत।
३९	दृढ उत्साही	अपने विचार को न छोड़ने वाला	किसी कार्य्य को आरम्भ कर देने के पश्चात नाना प्रकार की आपत्ति आने पर भी जो नहीं छोड़ता उसको दृढ़ उत्साही कहते हैं।
४०	द्यूत	जुआ	जिसके खेलने से महाभारत की जड़ जमी।
	ध	ध	ध
१	धर्माचरण	पाप न करना धर्म करना।	इमानदारी।
२	धन्यवादार्ह	प्रशंसा करने योग्य	
३	ध्यानावस्थितहोकर	ध्यान लगाकर	ईश्वर के गुणों के विचार में लय होकर।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
४	धूर्त	ठग, उन्मत्त, जुए बाज दूसरों को दुःख देने वाला मारनेवाला	उन्मत कितवो धूर्तः, इत्यमर ।
५	धृति	धीरज धारण	धृति धारण, धैर्ययो इत्यमरः ।
६	धनुष	कमान	जिस मे तीर धरकर चलाते हैं
७	धनाध्यक्ष	कोक्षाध्यक्ष कोठका अधीकारी	खजाने का मालिक खजानची ।
८	धनवर्धक	धन का बढ़ाने वाला	व्यवहारिक पुरुष का नाम धनवर्धक है ।
	न	न	न
१	नम्र	नमा हुआ नीचे को झुका हुआ	
२	नर्क	विशेष दुःख	(दोजख़) जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है वह नर्क कहाता है
३	नमस्ते	मैआप का मान्य करता हूं वा करतीहूं	नमस्ते को स्त्री पुरुष दोनो बोलसक्ते है ।
४	नवुसा अहान	खुदा का घर फूंकने वाला	इससे मालूम होता है कि खुदा शरीर वाला है ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५	नथनोमे	नाकक स्वरामें	
६	नरशृङ्ग-काधनुप	आदमि के सींग की कमान	
	ना	ना	ना
१	नाशरहित	अविनाशी जिस का कभि नाश नहो	नित्य ईश्वर जीव प्रकृति यह तीनो नाश रहित है और सब नाश मान है।
२	नापित	नाई	पंजाव मे नाई को राजा भी कहते हैं।
३	नाड़ीछेदन	नाल काटना	जो बच्चे की नाभी की नाड़ी काटी जाती है उसको नाड़ी छेदन कहते है।
४	नागदन्त	छींका छिक्कु	जो लोहे वा रस्सी आदि का वनाकर मकान मे किसी वस्तु के रक्खने के लिये टांगते है।
	नि	नि	नि
१	निर्णय	निश्चय	पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष करके बात को ठीक करने का नाम निर्णय है।
२	नियम	कायदा	(कानून जावतह)
३	निर्भ्रान्त	सन्देह रहित बेडर	
४	निकृष्ट	नींच घटया	कमीना

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५	निरंजन	कलङ्क रहित	दोष रहित
६	निर्विकार	एक रस जिसमें कुछ भी घटना बढ़ना रूप विकार नहीं	अर्थात् बुराईयों से अलहदा जो हो उसका नाम निर्विकार है।
७	निमित्त	हेतु कारण लिये वास्ते	जैसे कोई कहता है कि दर्शन के वास्ते आया था उसको निमित्त कहते हैं।
८	निमित्त कारण	कर्ता	जो बनाने वाला है जैसा कुम्हार घड़ को बनाता है इस प्रकार के पदार्थों को निमित्त कारण कहते हैं
९	निवारणार्थ	शान्त करने के लिये	दूर करने के लिये वाहन न करने के लिये।
१०	निर्दोष	दोष रहित	जिसमें कोई खराबी न हो उस को निर्दोष कहते हैं।
११	निश कामना	बिना इच्छा	(बेमतलब)
१२	निग्रह	रोकना वश में करना	
१३	नित्य	सदैव वा नाश रहित	प्रति दिन वा पेव जैसे प्रकृति जीव ब्रह्म है वा संध्या इत्यादि रोज करी [जाती है।
१४	निम्न लिखित	नीचे लिखा हुआ	
१५	निश्चित विजय	अवश्य जय होना	(जरूरही जीत होना)

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१६	निरन्त सुख	सदैव रहने वाला सुख	जिसको कभी तकलीफ न हो उसको निरन्तर सुख कहते है।
१७	निन्दा	बुराई	(हिजो)
१८	निरोधक	रोकने वाला	जैसे बुराईयों से गुरु बचाता है
१९	नियत समय	बधी हुई वेला	(ठीक वक्त वक्त मुकर्रि)
२०	नियुक्त	कार्य्य मे लगाया हुआ जोड़ा हुआ वा नियोग किया हुआ	
२	निवृत हो	कार्य से वेला होकर निवटकर	(फारिग होकर)
२२	निरन्तर	अन्तर रहित मिला हुआ वा हमेशा	
२३	निक्षेप	धरोहर	अपना माल दूसरे के पास वा दूसरे का अपने पास रखने का नाम निक्षेप है।
२४	निर्भिमानता	अभिमान का न होना	(गरूर का न होना)
२५	निर्गुण	(गुण रहित)	
२६	निष्क्रिय	क्रिया रहित	आना जाना करनादि को क्रिया कहते है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२७	निमग्न	डूबा हुआ	
२८	निशोध	दूर करना मने करना	(रफे)
२९	निर्भ्रमज्ञान	भ्रम में रहित ज्ञान	(इल्मयकीनी)
३०	निर्माण करना	रचना बनाना	
३१	निराकार	आकार रहित	शरीर रहित जैसे आकाश वा ईश्वर।
३२	निदिध्यासन	निश्चय करके मानना	
३३	निरिच्छा	इच्छा रहित	
३४	निरोध	ठहरना स्थिर होना या करना रोकना	रोकना (साकिन)
३५	निमंत्रन	न्योता नौता धामा	श्राद्धादि में किसी को भोजनादि कराने का नाम निमंत्रण है
३६	निवारण	दूर करना शान्त करना	
३७	निद्रा१-४	सोता हुआ नींद में बेखबर	
३८	निस्सन्देह	सन्देह रहित शङ्का रहित	(यकीन वेशक)
३९	निर्मूल	बिना जड	(जिसकी जड़ नहीं)
४०	निरुत्साही	उत्साह को छोडे हुवे	

संस्कृत	भापार्थ	व्याख्या
४१ निराकरण	अपवाद	घुड़कदेना)
४२ निर्णयार्थ	निश्चय करने के लिये	तहक़ीक करने के लिये।
४३ नियम पूर्वक	ठीक २ कार्य्य में बंधा हुआ	
४४ नासिका च्छेदनादि	नाक काटना वगैरा विंधना वा काटनादि	
४५ निर्नु नासिक	जो अनुनासिक न हो	जो नाक में न बोला जाय वह निर्नुनासिक कहाता है।
४६ विपर अभि लापि	अत्यन्त चहाने वाला बहुत इच्छा करने वाला	
४७ निष्ठुरता	कठोरता करना कोड़ापन कठिनता	कर्कश[1], कठिन[2], क्रूर[3], कठोर[4], निष्ठुर[5], दृढ़[6], यह ६ नाम निष्ठुरके है
४८ निर्माता	रचने वाला बनाने वाला	
४९ निर्भय	बेडर वा शंका रहित	
५० निरपराधि	अपराध न करने वाला	(बेकसूर)

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५१	निवेदन	प्रार्थना प्रकट करना कुछ कहना	(जाहिर करना , नियम पूर्वक किसी से कोई बात कहने का नाम निवेदन है ।
५२	निश्कंटक राज्य	जिस राज्य में कोई चोर आदि कटक नहीं	कंटक दु:ख देने वाले को कहते है ।
५३	नियोग	रंडे रंडो का नियोग होना	देखो नोट अन्त में ।
५४	न्यूनाधिक	थोडा बहुत कम वर्ति	कमोवेश
५५	न्याय विद्वत्ता	न्याय शास्त्र में प्रवीणता	तर्क वितर्क द्वार गुण द्रव्यों को ठीक २ जानने का नाम न्याय विद्वता है ।
५६	न्यायदृष्ठि	सत्यासत्य के विचार की बुद्धी	
५७	न्याय व्यवस्था	ठीक २ फैसला	(इनसाफ की नजर) (अदालत का हुकम)
५८	न्यूनता	कमि	
५९	न्यायाधीश	न्यायकरने वाला	फैसला करने वाला ।
६०	न्यून	थोडा कम	
६१	न्यूनसेन्यून	कम से कम	
६२	निबन्ध	नियम	
६३	निग्रह करे	रोके	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	प	प	प
१	परिज्ञान	बहुत समझ	
२	पाङ्क्तका	बहुत सी पङ्क्ति श्रेणी २ [सतर] १० अक्षरों का छन्द । ३	वीथ्या लिरावालि पङ्क्ति श्रेणी इत्यमरः। यह पांच नाम पङ्क्ति के हैं।
३	परिपाटि	परम्परा-प्रचार रिवाज	किसी बात के चल पड़ने का नाम परिपाटि है जैसे महाभारत के पीछे पत्थरों की मूर्ति बना उनको ईश्वर मानकर पूजने का बुरा रिवाज हुआ है।
४	पश्चात	पीछे	(बाद को)
५	परस्पर	आपस में	
६	परहानि	दूसरे का बिगाड़। दूसरे का हर्ज	
७	परोपकार	दूसरों का भला करना	अर्थात अपने सर्व समय से दूसरे प्राणियों के सुख होने के लिये जो तन मन धन से प्रयत्न करता है वह परोपकार कहाता है
८	पदार्थ	द्रव्यादि सात ७	द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव, यह ७ पदार्थ हैं।
९	परिणाम	तोल वा माप	पैमाने वा सेर पुसेरी आदि को परिमाण कहते हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१०	परत्व	दूर वा छिपा हुआ	
११	पदच्छेद	पदों को पृथक २ करना	
१२	पक्षपात	किसी की तरफ-दारी करना	झूठ में भी किसी का साथ देना पक्षपात कहाता है।
१३	परलोक	दूसरा लोक	जिस में सत्य विद्या से परमेश्वर की प्राप्ति हो और उस प्राप्ति से इस जन्म वा परजन्म वा मोक्ष में परमसुख प्राप्त होना है उसको परलोक कहते हैं।
१४	परित्याग	दान करना वा छोडना	
१५	परोक्ष	छिपा हुआ	(गायब)
१६	परीश्रमी	परिश्रम करने वाला	(मिहनत करने वाला-खूब कार्य में लगा रहने वाला)
१७	पदाति	पैरों चलने वाला	(पैदल) पैदलसफर करने वाली पल्टन का भी नाम है।
१८	परिमित	नपा हुआ	मिणा हुवा पंजाब मे कहते हैं।
१९	परिच्छिन	टूटाफूटा टुकडे-पृथक २	एक देश में रहने वाले का नाम परिच्छिन्न है।
२०	परमेश्वरोक्त	ईश्वर का कथन किया हुआ	
२१	परिवर्तन	बदलना	(तर्मीम होना)
२२	परमस्त	दूसरे का मात हुआ	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२३	परिधि	धुरि ठिकाना	जैसे गाड़ी का पहिया घूमता हुआ लोह की शलाखा से नहीं हटता उस चक्कर का नाम परिधि है।
२४	परमप्रमाण	मानने योग्य बात बड़ा भारी प्रमाण	सनद आलय
२५	पराजय	हार होना	
२६	पर्यायवाची	एक ही अर्थ को करने वाले कई शब्द	जैसे पुरुष-मनुष्य आदमि आदि पर्य्याय है (मुतरादिफ)
२७	परिणाम	फल वा अन्त	(नतीजा-वा आखिर)
२८	पत्रसंपादक	अखबार का एडिटर	
२९	परमद्वेष	बडा भारी वैर	
३०	परमति	दूसरे की मति	(दूसरे की सलहा)
३१	पड़ पौत्र	पड़ौता	(पोते का पुत्र)
३२	पत्नी	अपनी स्त्री	(औरत) जिस के साथ में विवाह संस्कार वेदानुसार हो उसको पत्नी अर्धाङ्गी आदि कहते हैं। पंजाब में वौटी और संयुक्तप्रान्त में वहु बोलते हैं यह दोनों शब्द वधु शब्द को बिगाड़ कर बनाए हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्याय
३३	पक्षपात-रहित	सच को सच और झूठ को झूठ मानने वाला	किसी की तरफदारी करने वाला । (बेतास्सुव)
३४	पक्षिवत	उड़ने वाले जीवों की न्याईं	(परन्दों की तरह)
३५	पञ्च तन्मात्रा	सूक्ष्म भूत प्रकृति	
३६	पञ्चमहाभूत	अग्नि आदि पांचों	(अनासर कशीफा)
३७	पण्डित	विद्वान	
३८	पतांहु	जमाई जामाता	(दामाद)
३९	पशु	गौआदि अथवा जीवमात्र	पशु शब्द वेद में जीव मात्र का वाची भी है यथा । अथर्व वेद का० २ सूक्त ३४ मं० १ ।
४०	पैलौठे	पहिले उत्पन्न हुए	
४१	पलायन करते हुवे	भागते हुवे	
४२	परि पन्थि	डाका मारने वाला डाकू	
	पा	पा	पा
१	पाक्षिक पत्र	१५वें दिन निकलने वाला अखबार	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२	पाक शाला	भोजन बनाने का घर	(रसोई का मकान)
३	पाक शालास्थ	भोजन शाला में रक्खा हुवा	
४	पामरपन	नीचता कमीना पन	
५	पाषाण	पत्थर	
६	पारावार	पार और वार आद् और अन्त	(शुरू और अखीर)
७	पादाक्रान्त	पैरों के नीचे दबे हुवे	(लातों के मारे डरे हुवे)
८	पापाचरण	खोटे कर्म	(बेईमानी)
९	पायु	गुदा मलत्यागने की इन्द्रिय	भुणु+इति पांचाले प्रसिद्धा।
१०	पाद	पैर	लत पंजाबी)
११	पार्थवीय शरीर	मिट्टी का चोला	(जिस्मखाकी)
१२	पाठक	पढ़ाने वाला वा पढ़ने वाले	
१३	पाक विद्या में निपुण	भोजनादि बनाने में चतुर	
१४	पाण्डित्य	चतुराई	इल्मीयत

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१५	पिंड्डु किया	एक पक्षी जिस का नाम फाकता है	
१६	पाताल	अमेरीका देश	
१७	पांचाल	पंजाब देश	
	पु	पु	पु
१	पुशकल जीविका	बहुत आगम	(बहुत आमदनी होना)
२	पुनरपि	फिर भी दुबाराभि	
३	पुनः	फिर दुबारा	
४	पुनरुक्त दोष	एक बात अनेक बार कहना दोष है	
५	पुरुषार्थ	बल, ताकत, हिम्मत, इरादा	
६	पुनर	फिर दुबारा	
७	पुत्रबधु	पुत्र की स्त्री (बौटि (बहु)	(लड़के की औरत)
८	पुरश्चरण	अनुष्ठान पहिला पद सामने	पेशकदमी)
९	पुष्ठिमार्ग	बल प्राप्त करने का राह (रास्ता,	ताकत हासिल करने का तरीका

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१०	पुरुषार्थी	पुरुषार्थ करने वाला	कार्य्य करने मे न हटने वाला।
११	पुद्गल	परमाणु सुन्दराकार, आत्मा, देह	पुद्गलः सुन्दराकारे त्रिषु पुंस्यात्मदेहयो-इति मेदनी।
१२	पुष्कल	अधिक बहुत	
१३	पुत्तिका	दीमक कीड़ी	चिऊंटी।
१४	पुष्टि युक्त	बलवान	
	पू	पू	पू
१	पूर्वार्द्ध	पहिला आधा भाग	
२	पूर्ण हित	तन मन और धन से भलाई चाहना	
३	पूर्वज	पहिले पैदा हुवे बड़े	(बुजुर्ग)
४	पूर्वोक्त	पहिला कहा हुवा	
५	पूर्णभिषेक	ठीक प्रकार से राज्य गद्दी देना वा पूरातिलक	
६	पूर्ति	समाप्ति निवटाव	
७	पूर्व	पहिले	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
८	पूर्वोपार्जित	पहिले पैदा किया हुवा	
९	पूर्वापर विरोध	आपस में विरोध	प्रथम लेख दूसरे का खण्डन करे दूसरा प्रथम का तो उसको पूर्वापर विरोध कहते हैं।
१०	पूर्वदृष्ट का स्मरण करता है	पहिले देखे को याद करता है	
	प्र	प्र	प्र
१	प्रबन्ध बांधना	कार्य का ठीक करना	(इन्तजाम करना)
२	प्रक्षेप	फेंकना छुट देना	
३	प्रतीत होवे	दिखाई दे मालूम हो अनुभव हो	
४	प्रति निधि	पहिले के स्थान को दूसरा संभालने वाला	(वकील-मुखतयार)
५	प्रश्वास	अन्दर से बाहर आने वाला श्वास	
६	प्रधान	मुख्य बड़ा	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
७	प्रकटता	अनुभव होना वा दीखना	(जहूर)
८	प्रध्वंस	नाश	(तबाह बर्बाद)
९	प्रवृति	इच्छा वा कार्य में लगना	
१०	प्रतिबन्धक	रोकने वाला	परदा।
११	प्रमाण शून्य	बिना प्रमाण के	बेसबूत।
१२	प्रभुता	ईश्वर वा मालिक पन पतिपना	खाविन्दपना
१३	प्रमाण भूत	प्रमाणों से जकड़ी हुई वस्तु	दलीलों से साबित।
१४	प्रसव की पीड़ा	बालक उत्पन्न होने का दुःख	बच्चा पैदा होने की तकलीफ।
१५	प्रत्युत्तर	उत्तर का उत्तर	जवाबुल जवाब।
१६	प्रकाशमय	चांदने रूप	रोशन।
१७	प्रकाशमान	चमकीला प्रसिद्ध	मशहूर।
१८	प्रशंसनीय	बड़ाई करने लायक	तारीफ के लायक।
१९	प्रवीण	चतुर पूरा कामिल	जिस में कुछ कसर नहीं उसको प्रवीण कहते हैं।
२०	प्रकोर वा प्रकट	नगर के चारों तरफ की दीवार	शहर पनाह।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२१	प्रमादरहित	आलस्य रहित चतुर	होशियार।
२२	प्रतिज्ञा	वचनभर नाश पथ करना	अहद करना।
२३	प्रतिदिन	हर रोज	
२४	प्रतिवादि	उत्तर दाता जवाब देने वाला	मुद्दाईला।
२५	प्रकार	तरह	
२६	प्रसिद्ध	जो छिपा हुवा नहीं जिसको सब जानते हैं विख्यात	वासवृत।
२७	प्रत्यक्ष सृष्टि	वर्तमान संसार	दीखती हुई दुनिया।
२८	प्रलय रूप जगत	नाशमान संसार	
२९	प्रकरण	प्रसंग	
३०	प्रकृति	स्वभाव वा पंचभूत	
३१	प्रकर्णस्थ वाक्य	प्रसङ्ग में आये हुवे वाक्य	
३२	परमाणु	जिसके टुकडे न हो सके संसार कारण	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३३	प्रमेय	इन्द्रियों से प्रतीत होने वाला विशय	जो प्रमाणों से जाना जाता है जो कि आंख का प्रमेय रूप है जो कि इन्द्रियों से प्रतीत होता है उसको प्रमेय कहते हैं।
३४	प्रवाह से अनादि पदार्थ	उत्पत्ति से रहित	जो कार्य्य जगत जीव के कर्म और जो इनका संयोग वियोग है ये तीन परम्परा से अनादि हैं।
३५	प्रलय	नाश	
३६	प्रमाद	आलस्य	प्रमादोऽनवधानता-इत्यमरः। गफलत
३७	प्रमाण	गवाहि तोल नाप	अपनी बात को सिद्ध करने के लिये ऋषिकृत ग्रन्थों में से वा वेद में से कोई ईश्वरोक्त मंत्रादि उपस्थित करने को प्रमाण देना कहते हैं।
३८	प्रमेह	एक प्रकार का रोग	जो सोते हुवे वा लघु शंका करते हुए अथवा और किसी प्रकार से वीर्य्य स्खलित हो जाने का नाम प्रमेह है।
३९	प्रयोग	किसी कार्य का करना वा अच्छी प्रकारसे मिलाना	
४०	प्रविष्ठ	अन्दर चलेजाना	दाखिल।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
४१	प्रवृत्ति	लग रहना किसी बात पर अमल करना	किसी कार्य में चित्त का लग जाना ।
४२	प्रसारण	फैलाना किसी वस्तु का	
४३	प्रसन्नता	हर्ष, खुशी	रजामन्दि ।
४४	प्रक्षिप्त श्लोक	मिलावटी श्लोक	
४५	प्रकाशित	चमकता हुवा	चान्दने वाला ।
४६	प्रसूता	जिसके बालक उत्पन्न हुवा हो	[जच्चा] बालक उत्पन्न होने से आठ दस दिन पीछे तक प्रसूता कहाती हैं ।
४७	प्रथम पक्ष	पहिला पक्ष पहिला दावा वा मास का पहिला आधा भाग	
४८	प्रतिज्ञा	वायदा	मैं तेरा अमुक कार्य अवश्य करूंगादि-वाक्यों का नाम प्रतिज्ञा है ।
४९	प्रतिष्ठा	मान इज्जत	
५०	प्रतिपादित	कहा हुवा प्रत्यक्ष	ज़ाहिर ।
५१	प्रतिमास	हर महीन	
५२	प्रतिबिम्ब	छाँवलि परछांवा	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५३	प्रतिकृति	मूरत तस्वीर फोट	
५४	प्रथक	अलग दूसरा	
५५	प्रथम	पहिली	
५६	प्रदर्शन	देखना अथवा दीखना	
५७	प्रध्वंसाभाव	जो होकर न रहे	जैसे घड़ा पहिले नहीं फिर बन और फिर भी फूट गया तो कुछ न रहा।
५८	प्रत्युत	मगर लेकिन	
५९	प्रयुक्त	लगाना प्रयोग करना	
६०	प्रत्युपकार	उपकार पर उपकार करना बदला देना	
६१	प्रशंसक	बड़ाई करनेवाला	
६२	प्रभाव	रोब सत्ता दबाव बल	
६३	प्रवाहरूप	निरन्तर गमन करने वाला	
६४	प्रतिपादक	कहने वाला	
६५	प्रतिपाद्य	कथनकरने योग्य	
६६	प्रवृत	किसी कार्य में लगना	

संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
६७ प्रतिपादन	कथन कियाहुवा	सबूत किया हुआ ।
६८ प्रत्येकमत	हरेक मत	हर एक मजहब ।
६९ प्रकरणानुकूल	प्रसङ्गकेअनुसार	
७० प्रयत्न	कोशिस उद्योग	
७१ प्रत्यक्ष	आंखों आदि के सामने	जो प्रसिद्ध शब्दादि पदार्थों के साथ श्रोत्रादि इन्द्रिय और मन के निकट सम्बन्ध से ज्ञान होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं ।
७२ प्रसवसमय	जन्म समय	
७३ प्रस्ताव	बयान कुछकहना	
७४ प्रसिद्ध चिन्ह	जिसको सब जानते हों इस प्रकार का चिन्ह	चिन्ह लक्षण का नाम है। यथा कलंकाङ्कौल चिह्नंच चिन्हं लक्ष्मं च लक्षणम् ॥ इत्यमरः॥
७४ प्रपञ्च	जगत संसार कर भरना	(जहान)
७५ प्रलोभन	लोभ	
७६ प्राघुणिक	अतिथि	जो बिना तिथी के आवे उसका अतिथि नाम है ।
७७ प्रतिपत्ति पूर्वक	सन्मान पूर्वक	
७८ प्रतिष्ठित	विख्यात	नामी ।
७९ प्राड्विवाक	वकील	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्याय
८०	प्रकृति व शिल्पसिद्धि	प्रकृति से होने वाली सिद्धि	जैसे अग्नि आदि के वश से अनेक प्रकारों के रेलादि यान बनते हैं यह प्रकृति व शिल्प सिद्धि कहाति है।
	प्रा	प्रा	प्रा
१	प्राक्रमि	हौसले वाला	
२	प्राणि	जानदार मनुष्यादि	
३	प्रारब्ध	तकदीर	जो पूर्व किये हुवे कर्मों के सुख दुःख रूप फलों का भोग किया जाता है उसको प्रारब्ध कहते हैं
४	प्रार्थना	सहायता लेना	अपने पूर्व पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिये परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य की सहायता लेने को प्रार्थना कहते हैं।
५	प्रातः	सवेरे दिननिकले	
६	प्राय	अकसर	
७	प्राणायाम्	योग का एक अङ्ग	
८	प्राकृतभाव वाले	जड़ मूर्ति पूजने वाले	जो पत्थर की मूर्तियों को ईश्वर मानकर वा जानकर पूजते हैं उनको प्राकृत भाव वाला कहते हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	प्रि	प्रि	प्रि
१	प्रिय	प्यारा वा प्यारे	(मुहब्बत)
२	प्रीति	प्यार	
	पृ	पृ	पृ
१	पृथकत्व	अलग होनापन	(अड्डुपना-पं०) (अलहदगी फा०)
२	पृथिवी	भूमी मिट्टी	
३	पृथिविमय	मिट्टी का बना हुआ	
	प्रे	प्रे	प्रे
१	प्रेमबद्ध	स्नेह में जकड़ा हुआ प्यार में बधा हुआ	
२	प्रेरक	प्रेरणा करने वाला कहने वाला कार्य में लगाने वाला	
३	प्रेरित	प्रेरणा किया हुआ	(भेजाहुवा सिखाया हुवा)
४	पैगम्बर	अवतार देवता	
५	पैशुन्यम्	चुगली	
६	पौरुशीय	पुरुष से पैदा होने वाला वा वडाई	(बजुरगी।)

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	फ	फ	फ
१	फलित ज्योतिष	दुःख सुख बत लाने वाला ज्योतिष	
२	’फरिश्ते	नौकर दूत	
	ब	ब	ब
१	ब्रह्मवित्त	ब्रह्म का जानने वाला	
२	बन्धनकर्ता	कारागर में भेजने वाला बांधने वाला	(कैद करने वाला)
३	वंशस्थ	बंश में स्थित कुल में रहने वाला	खान्दान में रहने वाला।
४	बल	ज़ोर, ताकत	
५	बध के योग्य	मारने योग्य	फांसी देने लायक।
६	बलात कार	जबर दस्ति	
७	बाधिर	बहिरा	कानों से नहीं सुनने वाला।
८	बन्ध्यास्त्री	बिना सन्तान वाला औरत	
	बा	बा	बा
१	बाधक	रोकने वाला।	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२	बाहू	हाथ कुहनी से ऊपर	
३	वामीकीय	बांई तरफ	
४	बाह्य	बाहर	
५	बुद्धि	सत्या सत्य के विचारने का हेतु	(अकल)
६	बुद्धि नाशिक पदार्थ	बुद्धि को बिगाडने वाली वस्तु शराबादि	
७	बीजगणित	जरब मुकाबिला	
८	ब्रह्मस्थ	ईश्वर के ध्यान में लवलीन (बेखबर रहना	
९	बृद्ध	बूढ़ा	जिसकी आयु ७५ वर्ष से ऊपर हो उसको वृद्ध कहते हैं।
१०	विहीन	प्रातःकाल	
११	बेडौल	ऊंची नीची	
१२	बलाध्यक्ष	लड़ाई में आज्ञा देने वाला	
	भ	भ	भ
१	भद्रकुल	अच्छा खानदान	शरीफ कुटुम्भ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२	भस्मिभूत	राख होजाना	
३	भवातिक सम्बन्ध	प्राकृति का सम्बन्ध	पञ्च तत्वों का मेल।
४	भवातिक	प्राकृतिक जो प्राकृति से बने	
५	भविष्यत	होने वाला	
६	भगनी	बहिन	
७	भण्डार	खजाना	
८	भाषान्तर	अन्य भाषा	(दूसरी ज़बान)
९	भयभीत	डरा हुआ	कम्पता हुआ।
१०	भाव	विचार	ख्याल।
११	भावना	मानना	ख्याल।
१२	भिन्नस्थान	दूसरी जगह	
१३	भित्त	दीवार	कन्द इति पाञ्चाले।
१४	भिक्षुक	मांगने वाला	फ़कीर।
१५	भूगाल	भूमि का जगरा फिया जिसमें ज़मीन की प्रत्येक बात का वर्णन हो	
१६	भूषित	सजा हुआ	
१७	भेद	फ़रक	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१८	भेदकशक्ति	टुकडे करने की ताकत	
१९	भृत्य	नौकर	खिद्मतगार।
२०	भोजन	खाने योग्य पदार्थ	
२१	भक्ष्य	खाने योग्य	
२२	भीषण	भयंकर	
२३	भीरु	डरपोक	
	म	म	म
१	मधु	शहत वा मीठा	
२	मनवांछित	मनचाहा	
३	मननशील	विचार शील	किसी बात को विचारने (सोचने) वाला।
४	मनो वेग	मनकी तेज चाल	
५	मर्मस्थान	नरम अस्थान	मुलायम जगह।
६	मासिक	महावारि महीने के महीने	
७	महावाक्य	जो बहुत वाक्यों को मिलकर बने	वाक्योच्चयो महावाक्यम। इति दर्पण।
८	महासंग्रही	बडे जोड़ने वाले	
९	महान्त	बड़ा मन्दिर का पुजारी	
१०	महा प्रधान	सब में बड़ा वा मुख्य	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
११	महाशय	बडा आशय रक्खने वाला विद्वान	हौसले वाला।
१२	मण्डन	किसी बात को प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध करना	
१३	महाभयंकर	बहुत डरावनि सूरत वाला	जिसको देख वा सुनकर बड़ा डर लगे उसको महा भयकर कहते हैं।
१४	मन्तव्य	माना हुआ वा मानने योग्य	
१५	मन्त्री	वजीर	
१६	मंगला-चरण	अस्तुति आनन्द देने वाला काम	(खुशी का चलन)।
१७	महान विषय	बड़ा प्रसङ्ग कठिन बात	
१८	मंगलकारी	आनन्द करने वाला	
१९	मादकद्रव्य	मूर्छा कर देने वाली वस्तु	नशा करने वाली चीज जैसे तम्बाकू गांजा भंग मद्यादि को मादक जानो।
२०	मनुष्य	आदमि पुरुष	जो विचार के बिना किसी काम को न करे उसका नाम मनुष्य है

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२१	मरण,	मरना	
२२	मतलब-सिन्धु	मतलब साधने वाला	सिन्धु समुद्र का नाम है।
२३	मर्दन	नाश करना	
२४	महिपति	राजा	
२५	मद्यपानी	शराबी	
	मा	मा	मा
१	मार्जन	छींटा देना जल छिड़कनादि	
२	मार्जार	बिलाब	बिल्ली।
३	माननीय	मान करने योग्य	(इज्जत करने लायक)।
४	मान	बड़ाई	
५	मायावी	कपटी छली	जो छल कपट स्वार्थ में ही प्रसन्नता दम्भ अहंकार शठतादि दोष हैं और जो मनुष्य इस में युक्त हो वह मायावी कहाता है
	मि	मि	मि
१	मित्र	प्यारा सुहृद दोस्त	देना लेना अपनी गुप्त बात उस से कहना उसको पूछना उसका खाना अपना खुलाना यह ६ लक्षण मित्र के हैं।
२	मिथ्या	झूंट	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	मिथ्या प्रलाप	झूंठ बोलना	(फर्याद बेईमानी)
४	मिथ्या भाषण	झूंठ बात	जो कि सत्य भाषण अर्थात सत्य बोलने से विरुद्ध है उसको मिथ्याभाषण कहते हैं।
५	मिताहार	थोडा भोजन करना	
६	मिश्रफलदायक कर्म	अच्छे और बुरे फलों को देने वाले कर्म	
	मु	मु	मु
१	मुक्ति	दुःखों से छूटना	
२	मुमुक्षु	मुक्ति पाने की इच्छा करने वाला पुरुष	
३	मुख प्रक्षालन	मुंह धोना	
४	मुख्य कर्म	बडा काम जरूरी काम	जिस कर्म के बिना किये उपकार न हो उसको मुख्य कर्म कहते है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५	मुख्यसेनापति	फौज का बड़ा अफसर मालिक	फौजी लाट।
६	मुख्य-न्यायाधीश	न्याय करने वालों में बड़ा	
७	मुख्य-राज्याधिकारि	राज्य का प्रबन्ध करने वाला	
८	मूत्रांश,	मूत्र की बूंदें	
१०	मूर्ख	मूढ़	जो अज्ञान हठ दुराग्रह आदि दोष सहित है उसको मूर्ख कहते हैं।
११	मुख्य		सब से अच्छा।
	मृ	मृ	मृ
१	मृत्युनिवारक	मौत का दूर करने वाली	
२	मृगतृष्णा	बालु (रेत) को जल मानना	जैसे हिरण रेत को पानी जान कर उसकी ओर दौड़ता है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	मृगया	शिकारी	
४	मृषा	झूंठ	
५	मृतक है	मरा हुआ है	मुर्दा है।
६	मृगया खेलना	चौसर खेलना	
	मै	मै	मै
१	मैथुनि सृष्टि	स्त्री पुरुष के संयोगसे उत्पन्न होने वाली प्रजा	
२	ममना	ईसा वा बकरी का बच्चा।	
३	मेघ	बादल	
	मो	मो	मो
१	मोहित	प्यार के बन्धन मे न बंधा हुआ मूर्छित	मूर्छांतुक श्मलंमोह इत्यमरः।
२	मोह	प्यार मूर्छित	बेहोशी।
३	मोक्ष	मुक्ति	दुःखों से छूट जाना।
४	मोह को प्राप्त न होकर	चैतन्य होकर	बेखबर न होकर।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	य	य	य
१	यथार्थ	जैसा अर्थ हो ठीक ठीक	(हुबहू)
२	यज्ञ	हवन	
३	यथावत	ठीक ठीक	
४	यथा-र्थज्ञान	सच्चा ज्ञान	
५	यथेष्ठा चार	इच्छानुसार कार्य्य करना वा अच्छा कार्य्य करनादि	
६	यथोचित	जैसा उचित हो	करने योग्य को उचित कहते हैं
	या	या	या
१	याथा-तथ्य	ठीक ठीक	(हुबहू)
२	यान	सवारी	जिसमें बैठकर कहीं आना जाना होसके उसको यान कहते हैं।
	यु	यु	यु
१	युक्ति	दलील	
२	युवति	जवान स्त्री	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३	युवा	जवान पुरुष	
४	युगपद	एक बार वा एक समय	
५	युवाअ-वस्था	जवानी उम्र	
६	युक्त	जुड़ा हुआ मिला हुआ ठीक ठीक	
७	युक्ति-शून्य	युक्ति से खाली	जिसमें कोई दलील नहीं।
८	योगक्षेम	कुशल पूर्वक मेल अच्छा मेल	श्व श्वपसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गल शुभम्। भावुकं भावकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम। इत्यमरः। यह ११ नाम क्षेम के अमर कोश में लिखे हैं इसके पूर्व योग शब्द जोड़ने से अच्छा मेल अर्थ हुआ।
९	यरुसलम	एक शहर जिस में ईसाईयों के खुदा का घर है	
१०	याजक	हवन करने वाले	
	र	र	र
१	रक्षार्थ	रखवाली के लिये	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्याय
२	रंक	कङ्गाल	जिस पर खाने पीने को कुछ न हो उसको रङ्क कहते हैं।
३	रविवार	ऐतवार	
४	रज	एक प्रकार का रुधिर (लहू)	रज नाम उस रुधिर (लहु) का है कि जो पुरुष के वीर्य्य के साथ मिलकर गर्भाशय में शरीर बनना आरम्भ होजाता है।
५	रजस्वला	वह स्त्री जिस को मासिक रुधिर (लहुखून) आ रहा हो	
६	रहस्य-युक्त	छिपा हुआ	
७	रमणीय	रमण करने योग्य	जिसमें छञ्चल चित्त की गति रुक कर जीवात्मा आनन्द करे उसको रमणीय कहते हैं।
८	रक्तनेत्र	लाल नेत्र (आंख)	
	रा	रा	रा
१	राक्षस	दुर्जन	जो मांस खाने मद्य पान करने वाले हैं और वैदिक व्यवहार को नहीं करते वा वेद का नाम धर कर कि वेद में आज्ञा है बकरे

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			और भैंसे देवी देवतों की मूर्ती के सामने मारते हैं उन दुष्टों ही का नाम राक्षस है।
२	राग	मित्रता लवलीनता गीत लाल रङ्ग	
३	राजसभासद्	राजा की सभा के मेम्बर	(दर्बारी अहलकार)
४	रागी	किसी स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला पुरुष वा गीत गाने वाला	
५	राजरोग	भयङ्कर रोग	कुष्ठादि को राज रोग कहते हैं।
६	राजवंशावली	राजाओं का शिजरा	किसी राजा का वृतान्त इस प्रकार लिखना वा वरणन करना कि अमुक राजा का अमुक पुत्र और अमुक पौत्रादि हुवे तथा इतनी पीढी तक उसका राज्य चला इत्यादि राज वंशावलि कहाता है।
७	रूक्षक	रूखे	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
८	रेचक	दस्तावर	
९	रेंगवैयों	घिसर कर चलने वाले सर्पादियों	
	रो	रो	रो
१	रोगविनाशक	रोग को नाश करने वाली गिलोय आदि औषधि	
२	रोमाच	शरीर का रुवां खड़ा हो रोम खिलना	
	ल	ल	ल
१	लंकेश	लंका का ईश (राजा) रावन	
२	लक्ष्यार्थ	जो अर्थ लक्षणों से बने	जैसे (गंगायां घोष) अर्थात गङ्गा में घर है, तो यहां विचार होगा, कि जल प्रवाह रूप गंगा में तो घर नहीं, ठहर सकता इस लिये लक्षणा करनी चाहिये, अर्थात गङ्गा के किनारे पर घर है यह लक्ष्यार्थ हुआ।
३	लम्पट	खोटा स्त्री भोगादि विषयों में लगा रहने वाला	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
४	लघुशंका	पेशाब	
५	लज्जित	शर्मिन्दा लज्जा करने वाला	
६	लक्षित	लक्षण किया हुआ	प्रत्यक्ष (जाहिर)
७	लावण्य	शोभा खूबसूरती	
८	लाडन	प्यार	
९	लिप्त	लिपटा हुआ लिथडा हुआ	
१०	लोलुपता	आसक्त हुआ २	लोभ।
११	लौकिक पदार्थ	लोक में होने वाले पदार्थ जैसे अग्नि	
१२	लोभ	वाल	
	व	व	व
१	वर्ण	मनुष्यों के वि-भागों का नाम है	जो गुण और कर्मों के योग से ग्रहण किया जाता है, वह वर्ण शब्दार्थ से लिया जाता है। सो वर्ण के ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह चार भेद हैं।
२	वर्धक	बढ़ाने वाला	
३	वर्णानुकूल	वर्णों के अनुकूल	(कौम के मुताबक)
४	वक्ष्यमाण	जो आगे कहेंगे	
५	व्यय	खर्च	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
६	व्यक्ति	शरीर देह	
७	व्यर्थ	बेकाम, बेफायदे	(फजूल)
८	वस्तुतः	वास्तव में	असिल में।
९	व्यसन	आदत, लत, अस्वभाव	
१०	वर्तुलाकर	गोलाकार	(दायरा)
११	वशीभूत	वश में आया हुआ	(काबू किया हुआ)
१२	वमन	उलटी, कैय	खाया पीया मुंह के रास्ते निकल जाना वमन कहाता है।
१३	व्याधि	रोग, वीमारी	
१४	व्यभिचार त्याग	व्यभिचार छोड देना	परस्त्री गमन करना, तथा और सब प्रकार से वीर्य्य की रक्षा न करना व्यभिचार कहाता है इस को छोडने का नाम व्यभिचार त्याग है।
१५	वाशि	वश में होनेवाला	
१६	व्यार	हवा, वायु	
१७	वत्स	बालक, वच्छडा गऊ का	वच्छा इतिपाञ्चाले।
१८	व्याप्ति	सहचारी, धर्म्म	
१९	व्याख्या सहित	भावार्थ सहित	किसी मन्त्रादि समझाने के लिये, अन्यान्यग्रन्थों के प्रमाणादि देने वा लिखने का नाम व्याख्या

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			होता है, वह व्याख्या जिसके साथ हो उसको व्याख्या सहित कहते हैं।
२०	व्यायाम शाला	अखाडा, कुश्तीघर	
२१	वक्ष्यमाण	जो आगे कहेंगे	
२२	व्याप्य व्यापक सम्बन्ध	आधार, आधेय सम्बन्ध	जैसा सम्बन्ध गन्ध्य और पृथवी का है, वा जल का और शतिका आपस में है।
२३	व्यावर्तिक	फैलाने वाला, प्रथक करने वाला	
२४	व्यवस्था	हालत, आज्ञा विशेष हाल	(फैसला)
२५	व्याकर्णानुसार	व्याकरण के अनुकूल	व्याकर्ण ग्रैमर, कवायद का नाम है)
२६	व्याधियुक्त	बीमारी युक्त	रोगी, बीमार।
२७	वाचक	बोलने वाला, कहने वाला	
२८	वाक्य	शब्दों का समूह	कई शब्दों को मिलकर एक वाक्य बनता है।
२९	वालबुद्धि	छोटी बुद्धि, बालकों की बुद्धि	ज्ञान प्राप्त करने के साधन का नाम बुद्धि है।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३०	वार्षिककर	सालाना टैक्स	जो राजा को वर्ष भर के पीछे अपनी आमदनी का कुछ भाग दिया जाता है उसका नाम कर है। कर हाथ को भी कहते हैं।
३१	वादी	प्रश्न करता, वाद करने वाला	मुद्दई (दावेदार)
३२	वाणी	जो मुख से शब्द संघात निकलता है उसको वाणी कहते है	
३३	वादाविवाद	निरर्थक शास्त्रार्थ	(फजूल मुबाहसा)
३४	वाद	कमुद्दमा	
३५	वारुणास्त्र	जल वर्षाने का हथियार	
३६	वाच्यार्थ	मुख्यार्थ	
३७	वाटिका	बगीचा	(वाग)
३८	वार्तालाप	बात चीत	
३९	वासना	इच्छा चहाना	(आजू)
४०	वादि	पराशर मुनी	व्यास जी के पिता जिन्होंने नौका चलाने वाले मल्हा की कन्या से नाव में ही नियोग किया था तब व्यास जी का जन्म हुआ था।

	संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
	वि	वि	वि
१	विस्तार पूर्वक	फैलाव सहित	(मुफस्सिल)
२	विस्मय	आश्चर्य	(हैफ़)
३	विलम्ब	देर (चिर)	
४	विच्छेद	टुकडे, तितर बितर,	
५	विवेकी विवेक	ज्ञानी, ज्ञान	(तमीज़दार)
६	विराट	ईश्वर	विविधंभाग चराचरं जग जयति प्रकाशयति इति विराट जो नाना प्रकार के जगत् को प्रकाश करे उस को विराट कहते हैं।
७	विश्वास घात	प्यारा बनकर धोखा देना	
८	विभू	व्यापक	
९	विशेष	अधिक	(ज्यादह)
१०	विरुद्ध	उलटा	
११	विदित	मालूम	जानाहुआ
१२	विशेषण	पहिचान कराने वाला	जैसे (ईश्वर) यह एक नाम है इस के सर्वशक्ति मान आदि विशेषता है ॥
१३	विजातीय	भिन्नजातीवाला	जैसे मनुष्य जाती से गऊ आदि जाति भिन्न हैं, मनुष्यों की तो

संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
		एक ही जाति होती है इन मे भिन्नता नहीं ।
१४ विश्वम्भर	संसार का पालने वाला	
१५ विस्तार	फैलाना	रिवाज़)
१६ विकार	विगाड रोग	(बीमारी)
१७ विशेषता	अधिकता	
१८ विधायक	विधान करने वाला	बनानेवाला कार्य का तरीका तरीका बनाने वाला ।
१९ विघ्न	रुकावट	(हर्ज)
२० विलक्षण	जिसका लक्षण विशेष कोई न कर सके	उमदा अच्छा
२१ विमुख	उलटा फिरा हुआ	
२२ विश्वास	यकीन एतबार	जिसका मूल अर्थ और फल निश्चय करके सत्यही हो उसका नाम विश्वास है ।
२३ विधान	तरीका	किसी बातका बतलाना कि इस प्रकार करना इसकानाम विधान है
२४ विरक्त	किसीसे प्रयोजन न रखने वाला	(आज़ाद)

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२५	विषयासक्ति	विषय योगी	(लज्जतों में फंसना)
२६	विजय	जीत	
२७	विद्युत	बिजली	
२८	विशारद	चतुर	
२९	विरोधि राजा	दुश्मन राजा	
३०	विविध प्रकार	नाना प्रकार	
३१	विपरीत	उलटा	
३२	विरोधभाव	लड़ाई झगड़े का विचार रखना सत्यज्ञान	निग्रहस्ताद्विरुद्ध इत्यमर निग्रहस्तु निरोधः स्यादितितादिकायाम । वैरं विरोधो विद्वेषो इत्यमरः, । वैरं विरोधः विद्वेषः त्रयं वैरस्य नामानि ।
३३	विद्या	सत्यज्ञान	जिससे ईश्वर से लेकर पृथवी पर्यन्त पदार्थों का सत्याविज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है उसका नाम विद्या
३४	विद्या पुस्तक	वेदादि ग्रन्थ	जो ईश्वरोक्त सनातन सत्यविद्यामय चारवेद हैं उनको विद्या पुस्तक कहते हैं

संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३५ विवादस्पद मार्ग	लड़ाई झगड़े का रहा	जिन बातों से वा पुस्तकों से लड़ाई झगड़े उत्पन्न हों वा बढ़ें उनको विवादस्पद मार्ग कहते हैं
३६ विद्यमान	दृष्टिगोचर सामने साक्षात	(मौजूद)
३७ विभाग	बांट	अंश भागौतु .वण्टके इत्यमरः अंश भाग और वण्टक यह तीन नाम भागके हैं। वण्ट का वियकर भाषामें बांट वना है भागके आदि में (वि) लगाने से विभाग बनता है जिसका अर्थ अच्छे प्रकार बांट ना है
३८ विवेचन	अनुसन्धाद परीक्षा	किसी वस्तुके सत्य असत्य वा अच्छा बुरा जानने के यत्न का नाम विवेचन है (तमीज़)
३९ विविधसृष्टि	नाना प्रकार का संसार	बहुत तरह की दुनियां
४० विरोधी	द्वेषी विरोध करने वाला	जिनके गुण कर्म स्वभाव आप से न मिलते हों
४१ विपुरीत प्रज्ञा	विपरीत बुद्धि	उलटी समझ
४२ विकल्प	प्रलय वा झूठ विचार	एक प्रकार समझने का नाम विकल्प है
४३ विषय	रूपशब्दादि	रूपं शब्दोः गन्ध स्पर्शाश्च विषया अमी इत्यमरः

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
४४	विस्तृत	फैलाहुआ	आकाशवत
४५	विद्धज्जन	पण्डित	विद्वान
४६	विहित	वेदमें कहाहुवा	(जायज़)
४७	विडालाक्ष	विलाव केसी आंखों वाला	विडाल विलाव का नाम है
४८	विमुख	नास्ति	
४९	विषयुक्त वस्तु	जहरीली चीज	
५०	विवर्तवाद		(कलाम ख्याली)
५१	विसर्जन	विदा	जहां से आये वहां ही चला जाना, विदा कहाता है, (सकसद)
५२	विहान	सवेरा प्रातःकाल	जिस समय दिन निकलता है।
५३	विश्राम दिवस	विश्राम करने का दिन	(आराम करने का दिन) (छुट्टी)
५४	विभव	धन दौलत	(खजाना)
५५	विक्षिप्त	स्थिर न होना, एक स्थान में न ठहरना	(मदहोश)
५६	विशेष व्याख्या	किसी बात को अधिक फैलाकर लिखना	(ज्यादह शरह)
५७	विनिष्ट वा विनष्ट	नाश	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५८	विभाजक	भाग करनेवाला	बांटने वाला।
५९	विश्वसृज	सब कार्यों को ठीक प्रकार से करने वाला	
६०	विषयासक्त	विषयों में फसा हुआ	
६१	विप्रदुष्ट	इन्द्रियों का गुलाम	
६२	विद्याविज्ञानादित	अनपढ़	मूर्ख।
६३	विवादस्पर्द्ध मार्ग	झगड़ा होने का स्थान	
	वी	**वी**	**वी**
१	वीतराग	जिसका राग बीत गया जिस को मोह कि सीका नहीं रहा	
२	वीर्य्यसवलित	वीर्य्य का गिरना	
३	वीर्य्यसंरक्षण	वीर्य्य की रक्षा करना	
४	वेद	ज्ञान के पुस्तक	जो ईश्वरोक्त सत्यविद्याओं से युक्त ऋक संहितादि चार पुस्तक हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५	वेदाङ्ग	वेद के अङ्ग	जो शिक्षा कल्प व्याकर्ण निरुक्त छन्द और ज्योतिष आर्ष सनातन शास्त्र है उनको वेदाङ्ग कहते हैं।
६	वेदानुयाई	वेद का मानने वाला	
७	वेदवित	वेद का जानने वाला	
८	वेष	रूप शृङ्गार,	(तरीक)
९	वेषधारी	रूप धरने वाला बहुरूपिये, वा झूंठ साधु नाम वाले	
१०	वेण्यागम नादि	रंडो बाजी	
११	वैधर्म्य	भिन्न धर्म वाला	जैसे अग्नि से पानी के धर्म पृथक हैं इस कारण पानी वैधर्म्य है।
१२	वैराग्य	पूरा ज्ञान	
१३	वृक्षाकार	वृक्ष की सूरत का	(दरख्त की तरह का)
१४	वेदमार्गोपदेश	वेद के मत पर चलने का उपदेश	धर्मकरना पाप से बचना दिखाने बतलाने का नाम वेद मार्गोपदेश है।
	श	श	श
१	शब्द	आकाश के	जहां शब्द होगा वहां जानो कि

		गुण का शब्द कहते हैं	यहाँ आकाश अवश्य है क्योंकि गुण गुणी का नित्य सम्बन्ध है।
२	शब्दप्रमाण	वेदका प्रमाण	वेद और सत्यशास्त्रों का नाम शब्द प्रमाण है।
३	शङ्का	सन्देह भ्रम	
४	श्रोता	सुनने वाले	
५	शीघ्र	जल्दी अभि	
६	शरीरस्थान	सुश्रुत ग्रन्थका वहभाग जिसमें शरीर के प्रत्येक अवयव का वरणन् है	
७	शिल्पविद्या	मकान बनाना आदि	
८	श्री	लक्ष्मी माया धन दौलत	खजाना।
९	सुश्रुषा	सेवा	
१०	श्वास स्पर्श	प्राणवायु के साथ मिलना	
११	श्वेतकेश	सुफेद बाल	
१२	शान्त	ठहरा हुआ	
१३	शुद्धान्तःकर्ण	स्वच्छ चित्त	(साफ दिल)
१४	शोधक	शुद्ध करने वाला	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१५	शोक	रञ्ज	
१६	शङ्कासमाधान	सन्देहों का दूर करना	
१७	शासन कर्ता	राज्य गद्दी का मालिक	(हाकिम)
१८	शान्तिस्थापन करना	लड़ाई झगड़ा को दूर करना	
१९	शान्त पूर्वक	धीरज धारण कर के	इत्मिनान के साथ
२०	शम	शान्ति	(तसकीन खातिर)
२१	श्रवण	सुनना	
२२	शिखा	चोटी	वोदी पंजाब में कहते हे
२३	श्रेष्ट	सबसे अच्छा	(बढ़िया)
२४	शत्रु	वैरी	
२५	शिशुमार चक्र	तारा मण्डल	
२६	शुश्क	सूखा	
२७	शाप	गालिदेना कोसना	शाप शब्द शपाक्रोशे धातु से बनता है।
२८	श्रीमान	धनमाद सेठ	दौलतमन्द
२९	शून्य	खाली	
	शरण	सहारा	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३१	शर्णागत	शरण में आया हुआ	(पनहा में आया हुआ)
३२	शतांशघन	धन का (१००) वाँ भाग	
३३	श्वास	वह वायु जो बाहर से मनुष्य के अन्दर जाती है	
३४	शठ	मूर्ख वद आदमी	(शरीर)
३५	शमान्वित	शान्त चित्त	
३६	शपथ	कसम	(सौं, पंजाबी
३७	शुद्धवायु	साफ हवा	
३८	शिष्टाचार	अच्छा व्यवहार	जिसमे शुभगुणो का ग्रहण और अशुभ का त्याग किया जाता है वह सिष्ठाचार कहाता है।
३९	शास्त्र	सत्य विद्या के पुस्तक	
४०	शोकातुर	किसी दुःख से दुखित हुआ	
४१	श्रम	मिहनत	
४२	शासन कर्ता	राज्य करने वाला	राजा को शासन करता कहते हैं
	ष	ष	ष
१	षट्कर्म	छे कर्म	पढ़ना पढ़ाना यज्ञकरना कराना

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
			दानदेना और लेना यह छे कर्म ब्राह्मण के हैं संस्कृत में इन को षट्कर्म कहते हैं ।
२	षट्शास्त्र	छे शास्त्र	न्याय १ वैशेषिक २ सांख्य ३ योग ४ वेदान्त ५ मीमानसा ६ इन छ का नाम शास्त्र है ।
	स	स	स
१	सत्यभाषण	सच बोलना	
२	सत्पुरुष	सच्चे मनुष्य	
३	सत्संग	अच्छासङ्ग भला मेल	
४	सगुणोपासना	गुणों के सहित उपासना	
५	साधारण कारण	सामान्य हेतु	जैसे घड़े के बनने में चाक और जिस से वह चाक घुमाया जाता है इत्यादि ।
६	सञ्चित	इकट्ठे-सिमटे हुए	जो कियेहुवे कर्मोका संस्कार ज्ञान में जमा होता है उसको संचित संस्कार कहते हैं ।
७	सदाचार	भला चलन	जोसृष्टिसे लेकरआजपर्यन्तसत्पुरुषों का वेदोक्त आचरण चला आताहै उसकोसदाचार कहते हैं
८	सर्वहित	सबका प्यार	जो तनमन और धन से सबके सुख बढ़ाने में उद्योग करना है उस को सर्व हित कहते हैं ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
९	सम्भव	जो होसके	जो बात प्रमाण युक्ति और सृष्टि क्रमसे युक्त हो वह संभव कहाती है।
१०	सर्वव्यापक	प्रत्येक वस्तु में रमा हुआ	(सुदित कुल)
११	समाधान	समझाना	
१२	शङ्कासमाधान	भ्रम का मिटाना	
१३	समर्थपुरुष	बलवान पुरुष	जो किसी धर्म कार्य के करने में भयन करे (ताकतवाला आदमि)
१४	समीप	थोडी दूर पास	(नज़दीक)पंजावमें कोल कहते हैं
१५	सच्चिदानन्द	सनाचित आनन्द	सत उसका नाम है जो कभी नाश न हो। चितनाम चेतन का है अर्थात जिस में ज्ञानादि गुण हों और आनन्द हर्ष को कहते हैं यह तीनो जिस में इकट्ठे रहें उसको सच्चिदानन्द कहते हैं।
१६	समायु	बराबर उम्र	(हमउम्र)
१७	समग्र	सर्व सब	
१८	संगति	अच्छि गतिमुक्ति	पापों के वन्धन दूर कर धर्माचर्णों के फलों के प्रभाव से जन्म मरणादि पाप के वन्धनों से मुक्त होकर जीवको चिर काल के लिये चन्द्रमादि लोकों में गमन करना है उस को सद्गति कहते हैं।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
१९	सचीव	मंत्री दीवान कार्रिंदा मुनीम	(वजीर)
२०	समर्पित	दिया हुआ दूसरे के आधीन किया हुआ	(कुर्बान)
२१	समर्पण	सब कुछ देदेना	
२२	सर्वांश	सारा ही प्रत्येक भाग	(हरेक हिसा)
२३	सप्तभंगि	एक मतका नाम है	सप्त उस्वात का नाम है। और भङ्गी कुटिलता का एक भेद है।
२४	संमति	एक से विचार मिलि हुई बात	(इतफ़ाक सलाह)
२५	सक्रिय	क्रिया के सहित क्रियाकरनेवाला	(वाफेल)
२६	समीक्षा	विचार सत्या-सत्य को नितारना	(मुनाजरा)
२७	संग्रह	संचित इकट्ठा	(जमा ढेर)
२८	समवाय सम्बन्ध	जो सम्बन्ध कदापि न टूटे	(जैसाफूल और गन्ध) (जातिताल्लुक)
२९	सहवास	एक साथ वा एक स्थान मे रहना	
३०	संग्रिहीत	ग्रहण कियाहुआ इकट्ठा किया हुआ	(समेराहुवा)

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३१	सर्वोत्तम्	सब से अच्छा	
३२	समुदाय	समुह-झुण्ड-ढेर समाज सभा	पशुपाक्षिनां अन्य समुह समाजः पशु और पक्षुओं के झुण्ड से अन्य जो झुण्ड है उस को समाज कहते हैं।
३३	समुदाय	झुंड-ढेर	
३४	सहोदर	एक उदर(पेट ढिड) से उत्पन्न हुवे सगे भाई	
३५	स्वजातीय	समान जाति वाले	मनुष्य मात्र की एक जाती है इसलिये मनुष्य मनुष्य का स्वजाति कहलाता है।
३६	सभ्य	चतुर	
३७	सभ्यता	चतुराई ल्याकत	(तहजीब)।
३८	समागम	भोग करना या आपस मेंमिलना	
३९	समग्र	सर्व सब सारा	(कुल)।
४०	सर्वाधार	सब का आश्रय सबको संभालने वाला	
४१	सकल	सर्व सब	(कुल)।
४२	सर्व	सारा	(कुल)जिससे कुछबचाहुआ नहीं
४३	सत्कर्तव्य	करने योग्य कर्म	वेद विहित कर्मों का करना कराना और सतशास्त्रों कामानना सत्कर्तव्य है।

	संस्कत	भाषार्थ	व्याख्या
४४	समास	के पदों को राजगह मिलाना समास कहाता है	
४५	सहजता	स्वभाविक हौसले से	(आसानि से आहिस्ता से)
४६	समावर्तन	एक संस्कार का नाम है जो मनुष्यों के १६ संस्कारों में से १२ संस्कार हैं	
४७	सगक्ष	दृष्टिगोचर आंखों के सामने	
४८	समीपस्थ	पास बैठा हुआ	
४९	समुचित	बड़ा उचित मानने योग्य	(बहुतमुनासिब)
५०	समर्पित करदेवे	देदेवे सोंप देवे दान करदे	जैसेगोकुलि गुसाइयों के चेले अपने गुरुको स्वस्त्री आदि देते हैं
५१	सन्देह निवृति	भ्रम का नाश होना	जैसे रस्सी को सांप जानने रूप भ्रम चाँदने के होते ही नाश हो कर सत्य ज्ञान हो जाता है उस को स·देह निवृति कहते हैं।
५२	सहनशील	जो किसी के गालि देने पर क्रोधादि नहीं करता उसको सहनशील कहते हैं	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५३	सहारे के विना	आडन होने पर	(विनामद्दके)
५४	सर्वस्वहरण	सब कुछ छीन लेना	
५५	सम्भूमि	एक सासीधरती	(बरावर जमीन)
५६	सभासद्	जिनका नाम सभा के रजिष्टर में लिखा हो	(मेम्बर)
५७	सहासी	साहस करने वाला जुरत करने वाला	
५८	सतकार	आदर	(इज्जत)
५९	सनातन	पुराना कदीम	एकनवीन पुराणिक मत की सभा भी सनातन के नाम से खड़ी होगई है उसको नवीन ही जानना
६०	सर्वान्तर यामि	सबके अन्दर और बाहर का जानने वाला	(ईश्वर)
६१	समर्थपुरुष	बलवान मनुष्य	(ताकतवर आदमि)
६२	सर्वज्ञ	सब कुछ जानने वाला	
६३	सर्वमान नीय	सबके मानने योग्य	सब के बुरे भले कर्मों का फल देने वाला

	संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
६४	सर्वनता	सबका पालन पोषण करने वाला	रक्षा करने वाला (मालिक कुल)
६५	सहचार	साथ रहना	
६६	सहचारी	साथी साथ चलने वाला	
६७	सदृश	बराबर सम	(आपस में एक जैसे)
६८	सपष्ट व्याख्या	सबके समझमें आने योग्य अर्थ	
६९	सभेष	सभाका ईश प्रधान वा परीज, तुणट	
७०	सत्व	सत शुद्ध	(जौहर)
७१	समाधिस्थ	समाधि लगाये हुवे योग में बैठा हुआ	ईश्वर का ध्यान करते २ जब जिसको संसार का ज्ञान नहीं रहता तब उसको समाधिस्थ कहते हैं।
७२	समयान्तर	और वक्त	
७३	संज्ञा	नाम	
७४	संज्ञक	नाम वाला	
७५	संस्कार	शुहर प्रकार की और प्रत्येक वस्तु की	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
७६	संदिग्ध	जिस बात में निश्चय न हो	भ्रम होने का नाम संदिग्ध है।
७७	सन्देह	भ्रम किसी बात का निश्चय न होना।	
७८	संवाद	आपस में वार्ता लाप करना	
७९	संकल्प मात्र	विचार तक	(ख्यालतक)।
८०	संघात	मिला हुआ	गड्डमड्ड पूर्व में कहते हैं।
८१	संचय करना	अच्छे प्रकार चुनना समेटना	
८२	संकुचित	लज्जित सुकड़ा हुआ	शर्मिन्दा हुआ।
८३	संदेश	खबर	चिट्ठी आदि में खबर देने का नाम संदेश है।
८४	संकेत	सिखलाई हुई बात	इशारा।
८५	संघटित	अच्छे प्रकार घटा हुआ	जैसे धनमान शब्द धन वाले में ही घटता है।
८६	संक्षेप	थोड़ा	
८७	संख्या	गणना गिन्ति	
८८	संयोग	मेल	
८९	संधी	जोड़	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
९०	संयोग जन्य वस्तु	मेल से उत्पन्न होने वाली वस्तु	जो दो चीजों के मिलाने से उत्पन्न हो उसको संयोग जन्य कहते हैं। यथा दो रंगों के मिलाने से तीसरा रंग बन जाता है।
९१	सीम	सीमा वाला	(हद्दवाला)
९२	संयोजक	मिलाने वाला	
९३	संकुचित	सुकड़ा हुआ	
	सा	सा	सा
१	सापेक्षता	परस्पर अपेक्षा	(निसबत इजाफी)
२	सार्थि	रथ का चलाने वाला	(कूचवान)
३	सार	तत्व सतभावार्थ	(खुलासा)
४	सानुनासिक	अनुनासिक के सहित	जो नाक में बोला जावे उसे अनुनासिक कहते हैं।
५	साक्षी	गवाह	
६	साक्षीमात्र	केवल गवाह ही और कुछ नहीं	
७	सार्थक	अर्थों वाला	जिस में से ठीक अर्थ निकले उसको सार्थक कहते हैं।
८	साधारण	सामान्य	(मामूली)
९	साधन	जो कार्य्य को साधे	जैसे घड़ा बनाने रूप कार्य्य को दण्ड चाकादि साधते हैं।
१०	सावधानि	चतुराई बचाव प्रत्येक बात का ध्यान रखना	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
११	साहस	धीरज	(हिम्मत)
१२	साधर्म्य	एक धर्म वाला वा अपने धर्म वाला	
१३	सामान्य	साधारण	(आम)
१४	सामग्री	बहुत औषधियों का समुह वा धनादि सामान	(असबाब)
१५	सायम	सूर्य्य छिपने का समय	शाम ।
१६	सामर्थ्य	शक्ति	(ताकत हौसला)
१७	सांझ	शाम	
१८	साँठा	सईया	इससे जहां कोल्हू में गन्ने पीढे जाते है वहां रस निकालते है इस को लोटा भी बोलते है । कोई सेर पक्का रस इसमें आता होगा ।

	सि	सि	सि
१	सिद्धान्त	माना हुआ	जो वाद प्रतिवाद से निश्चय हो उसको सिद्धान्त कहते है ।
२	स्विकार	मानना	
३	स्विकार करने योग्य	मानने योग्य	
४	सिद्ध	पका हुआ बना हुआ	जिसमें कुछ कसर नहो उसको सिद्ध कहते है जैसे सिद्ध योगी अर्थात् पूरा योगी इत्यादि ।

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
५	सिन्धु	समुद्र	
६	स्थिर	अचल	ठहरा हुआ।
७	सिद्धि	सफलता चित्त के संकल्प पूरे होना	(मुराद पूरा होना)
८	स्थिरारम्भी	धैर्य के साथ आरम्भ करने वाला	किसी काम को शुरू करने में जल्दी न करने वाला।
९	सीमा	हद किनारा	
	सु	सु	सु
१	सुपथ	धर्म रूपी मार्ग अच्छा रस्ता	(रहानेक)
२	सुभाषा विभूषित	अच्छी भाषा से सजा हुआ	
३	सुगत	अच्छी गती वाला भली अवस्था	(अच्छी हालत)
४	सुस्वाद	अच्छा स्वाद	(मजेदार)
५	सुशील	अच्छे स्वभाव वाला	(भलामानस)
६	सुगम	सहज	
७	सुरक्षित	भले प्रकार रक्षा (बचाव) किया हुआ	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
८	सुसिक्षित	भलो शिक्षापाया हुआ	
९	सुभूषित	खूब सजाया हुवा	
१०	सुपरीक्षित	खूब परीक्षा किया हुवा	जिसका खूब इमतहान लिया है
११	सुसिक्षा	भलिसिक्षा	(अच्छि तालिम)
१२	सुहृद्	मित्र मेली प्यारा	(यार दोस्त) पंजाब०
१३	सुगमकर्म	सुकाला कर्म सहज काम	(आसान काम)
१४	सुशुप्ति	गाढ़नीन्द्	जिससे कुछ खबर न रहे ऐसी नीन्द् ।
	सू	सू	सू
१	सूक्षंशरीर	कारण क्षरीर	जो आँखों से नहीं खसके
२	सूचना	खबर करना	(इतला)
३	सूर्योदय	सूरज निकले	
४	सूर्यास्त	सूरज छिपे	
५	सूक्षम	बारीक	
६	स्वर्णदान	सोने का दान	
७	स्थूलाकार	वड़ा आकार	(मोटा शरीर)
८	स्थापित	धराहुआ वनाया हुआ	(कायम किया हुआ)
९	स्वयम	आप ही	
१०	स्वच्छ	शुद्ध साफ़	

	संस्कत	भाषार्थ	व्याख्या
११	स्वत्व	अधिकार	(मिलकियत)
१२	स्वभाव	अपना भाव	जिसवस्तु का जो स्वभाविक गुण है जैसे कि अग्नि में रूप और दहा अर्थात् जबतक वह वस्तु रहे तबतक उसका वह गुण भी नहीं छूटता इस लिये इसको स्वभाव कहते हैं।
१३	स्वतः सिद्ध	अपने आप ही सिद्ध	जैसे सूर्य का प्रकाशित होना बिना प्रमाणों के ही सिद्ध है।
१४	स्वसिद्धान्त	अपनामाना हुआ	
१५	स्वार्थि	मतलबी	अपना मतलब निकाल कर सारों का कुछ ख्याल न करने वाला।
१६	स्वभाविक	स्वभाव से उत्पन्न होने वाला गुण यथा यथा अग्नि में गर्मी	
१७	समृद्ध	धनवान सेठ	
१८	स्वधर्म	अपना धर्म	जैसे जल में शीतलता मिट्टी गन्ध यदि यह इन के धर्म इनसे प्रथक हो जायें तो यह द्रव्य ही नष्ट हो जायें
१९	स्वाध्याय	अपने आप पढ़ना	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
२०	स्वधीन	अपने आधीन	पाराये वश में न होना
२१	स्वभाविक गुण	जो एक ही पदार्थ में पाया जावे	जैसे गर्मी आग में ही पाई जाती है।
२२	स्थूललक्ष्य	निशाना लगाने का बड़ा स्थान	(निशाना मुजस्सिम)
२३	स्तन	दूधी चूची छाती थन	(जिन को बाल मुल में पकड़ कर माता का दूधपीता है। उस को स्तन कहते हैं पिस्तां)
२४	स्तुति	बड़ाई तारीफ़ सच बोलना	गुणेषु गुणारोपणं दोषे षुदोषा रोपणं चस्तुति गुणों में गुणो का और दोषों में दोषों का आरोपण करना स्तुति कहाति है।
२५	स्वस्थ	दृढ़ निरोग	
२६	स्वकीय पदार्थ	अपने पदार्थ	(अपनी चीजें)
२७	स्वातंत्रीय	स्वाधीनता और के वश में न होना	
२८	स्थानान्तर	अन्य स्थान	(दूसरी जगह)
२९	स्वस्त्री	अपनी स्त्री	पंजाब में अपनी वोटी बोलते हैं
३०	स्वर्णभूमि	सोने की जमीन	
३१	स्मर्ण	याद	
३२	स्मृति	याद रखने की शक्ति	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
३३	स्वदेश भक्ति	अपने देश की भक्ति	(हुब्बुल वतनी)
३४	स्त्रैण्य		
३५	स्वमन्तव्य	अपना माना हुवा मानने योग्य	
३६	स्वात्मवत	अपने आत्मा की तरह	
३७	स्वतः प्रमाणवेद	वेद आपही प्रमाण है जैसे सूरज आपही प्रकाश है	जिस प्रकार सूर्य के देखने के लिये कहीं से प्रकाशलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती इसही प्रकार वेद अपौर्षेयादि होने के लिये किसी दूसरे ग्रन्थसे प्रमाण लाने की अवश्यक्ता नहीं
३८	स्थान	जगह	
३९	स्वर्ग	सुख विशेष	जो विशेष सुख की सामग्री को जीव का प्राप्तहोना है वह स्वर्ग कहाता है।
१	सृष्टि	संसार	(दुनिया)
२	सृष्टिक्रमानुकूल	कानून के मुताबक	
३	स्रष्टा	उत्पन्न करता	
४	स्रवित	चलना बहना	
५	सृजा	पैदाकिया	

	संस्कृत	भावार्थ	व्याख्या
१	सेनाधीश	फौजका मालिक	(सिपहसालार)
२	सेनास्थजन	फौजी सिपाहि	
१	सौभाग्य वति	अच्छे भागवाली	
	ह	ह	ह
१	हर्ष	खुशि	
२	हस्त	हाथ	
३	हनन	मारडालना	
४	हारिवर्ष	यूरोप देश	जिस देश का नाम यूरोप वा इंगलिस्तान है वा जहां वन्दर रहते हों
१	हाव	तरीका	(नज़ाकत)
२	हानीकारक	हानी करने वाले	(नुकसान पहुंचाने वाले)
१	हिंसक	दुखदेना	किसी को मन वचन और कर्म से दुख देने का नाम हिंसा है
२	हिन्दी भाषा	नागरी भाषा	
१	हुत द्रव्य	हवन की चीजें (वस्तु)	
१	हे दया निधि	पे कृपा के समुद्र	

	संस्कृत	भाषार्थ	व्याख्या
	त्र	त्र	त्र
१	त्रषा	प्यास	
२	त्रण	घास	
३	त्रसेणु		
१	ज्ञान	जानना	(दानिइलम) यथार्थदर्शनं ज्ञान मिति स० प्रका० प्र०१०,५
२	ज्ञेय	जानने योग्य	
३	ज्ञानरहित	मूर्ख मूढ़	नादान
१	क्षणभङ्ग	एक सकिण्ड में नाश होने वाला	(जल्दी नष्ट होने वाला)
२	अक्षत योनि	कुंवारी	जिस का संयोग किसीभी पुरुष से न हुवा हो उस के अक्षत योनि कहते हैं।
३	क्षणिक	एक सेकिण्ड	
४	क्षय	नाश	(जवाल)
५	क्षीण	निर्बल	
१	क्षुधा	भूक	
२	क्षुद्रता	नीचता	
३	क्षुद्रधन	थोड़ा धन	
४	क्षुद्राशय	छोटा विचार	